धर्मश्रीः सर्वमंगला
ॐ
गीता परिवार
श्रीकृष्ण सेवा निधि
संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

धर्मश्री

अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर - २०१९

गीता परिवार
गीता महोत्सव

गीता जयंती, दि. ८ डिसेंबर २०१९, संगमनेर, जि.अ.नगर (महाराष्ट्र)

विद्या धर्मेण शोभते
गीता परिवार

द्वितीय भीष्म पुरस्कार प्रदान समारोह

आदरणीय श्री. राजीवजी मल्होत्रा, इन्फिनिटी फाउंडेशन, अमेरिका, भारत

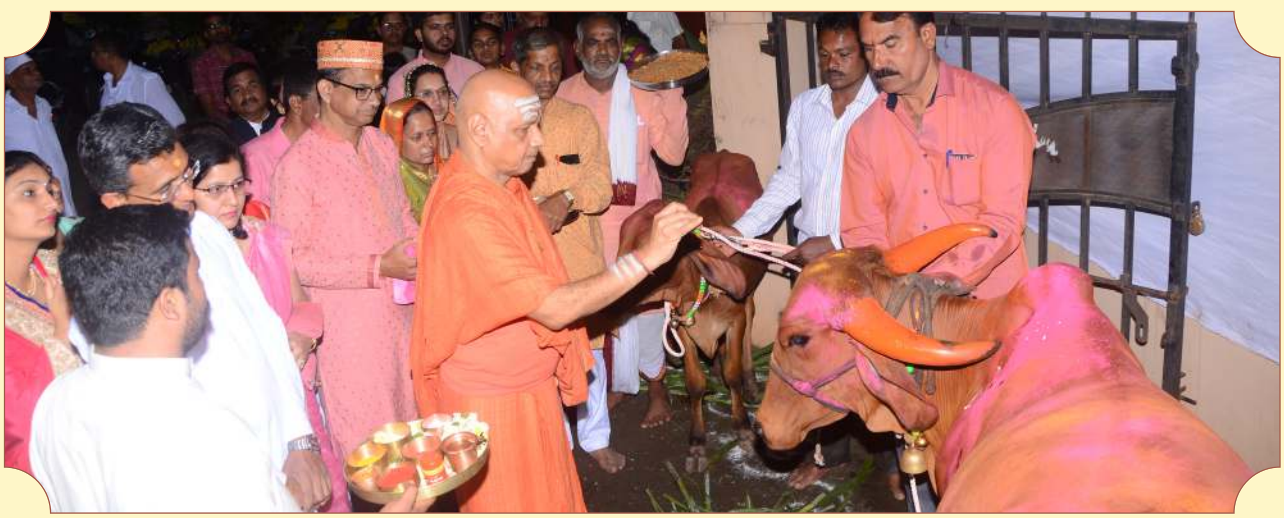

धर्मश्री अन्नकूट महोत्सव २०१९ - गौ पूजन

|| धर्मश्री ||

परम पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराजके उपदेशों एवं प्रवचनोंपर आधारित

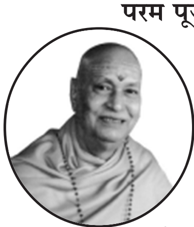

धर्मश्री

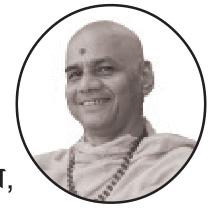

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिरके समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, २५६७२०६९
ई-मेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाइट : www.dharmashree.org

वर्ष १८ अंक ४ मार्गशीर्ष-पौष, युगाब्द ५१२१ त्रैमास : दिसम्बर २०१९

संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
संपादक मंडल :
पं. अशोक पारीक
श्री. गिरीश डागा
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
मुद्रक : **श्री. संजय भंडारे,**
स्वानंद प्रिंटर्स,
डेक्कन जिमखाना, पुणे – ४११००४
मो. नं.: ९८२३०१४८६२
svbhandare21@gmail.com

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. ज्ञानयोग व्यवस्थिति
९. विशुद्ध-हृदय कथा-वाचक के मुख से भगवान स्वयं ही बोलते हैं!
११. भगवान देख रहा है।
१४. भगवद्विश्वास के प्रतीक : नरसी मेहता !
१५. श्री राम का धरती पर अवतरण
१७. गीता महोत्सव, संगमनेर
३०. आलस्य का त्याग ही सफलता की कुंजी है!
३७. परम पूज्य गुरुदेवका ७१ वाँ जन्मोत्सव !
३८. द्वितीय भीष्म पुरस्कार
वेदविद्यालय
३३. गोठ मांगलोद, ३४ मणिपुर

सूचना
पत्रिकामें प्रकाशित विचार लेखकोंके अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादकका सहमत होना आवश्यक नहीं है।
– संपादक

*** आवश्यक सूचना ***

समस्त लेखकों, गीता परिवारकी शाखाओं एवं वेदविद्यालयोंसे विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पतेपर भिजवानेका कष्ट करें-

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

धर्मश्री के इस अंक के यजमान

श्री. राजगोपालजी मिणियार (सोलापुर)

साभिनंदन धन्यवाद!

गीताजी का चिन्तन हमें मृत्यु के भय से छुटकारा दिलाता है। -पूज्यपाद

|| श्रीहरिः ||

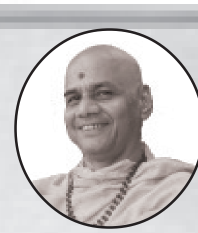

अभिनंदन पत्र

ॐ प्रिय गीता परिवार एवं अन्य स्नेही ..

संगमनेर का गीता महोत्सव निश्चित रूपसे अभूतपूर्व भव्य दिव्य अनुष्ठान रहा ! सामान्य जन से हमारे श्रेष्ठ अभ्यागतों तक सभी के द्वारा की गई इसकी भूरि भूरि प्रशंसा देश में सर्वत्र प्रसारित है ! हम सभी इससे उत्साहित एवं प्रेरित हैं! दूर दूर से पधारे हुए छात्र एवं परिश्रमी कार्यकर्ता भाई बहनों का तथा ध्रुव ॲकडमी के सभी का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन ! आपके बिना यह कार्य संभव ही नहीं था!

गीता परिवार की गंगोत्री संगमनेर शहर गीताभक्ति से ओतप्रोत हो हर प्रकार की सेवामें हृदयसे ऐसे जुट गया कि मानो हर व्यक्ति और परिवार को यह अपना निजी कार्य ही लगता था ! कृष्णजन्मोत्सव का गोकुल ही मानो अवतरित हो गया ! इस प्रेमभाव के हम कृतज्ञ हैं !

संपूर्ण श्री मालपाणी परिवार ने दीर्घकाल इस शहर की जो अनेकविध सेवा की है और असीम प्रेमादर तथा विश्वास संपादन किया है वह भी इस आत्मीयतापूर्ण सहभागिता का कारण है ! यह सत्त्वसंपन्न परिवार स्वभावत: गीतामय है ही ! इसके सभी सदस्योंका उत्साह ही इस कार्यक्रम की ऐतिहासिक सफलता की निर्विवाद आधारभूमि है ! गीता परिवार सदैव ऋणी रहेगा !

प्रियोत्तम चि. संजूभैया के योगदान के लिए शब्द ही अधूरे हैं! बर्बरीक ने कहा कि मुझे तो पूरे कुरुक्षेत्र में केवल कृष्ण ही दिख रहे थे! वैसे ही इस महोत्सव के छोटे बडे सभी कामो में संजूभैया की पैनी दृष्टि, अपार परिश्रम, सावधानता, प्रसन्नवदन मिलनसारिता, सूझबूझ और निरहंकारिता झलक रही थी! उन्हे सबकी ओरसे असीम प्यार! गीता परिवार के विद्यालय में परिष्कृत उनके नेतृत्व की प्रतीक्षा अब पूरा देश कर रहा है ! वह दिन शीघ्र देखने मिलें यह प्रभुचरणों में प्रार्थना!

हम सभी कार्य में आगे बढें, बढते रहें!

श्री ज्ञानेश्वरपदाश्रित

स्वामी गोविंददेवगिरिः

देवासुर संपद् विभाग योग (चार)

ज्ञानयोग व्यवस्थिति

श्रीमद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय ''देवासुर सम्पद विभाग योग'' पर परम पूज्य गुरुदेवकी विशद व्याख्याकी तृतीय कड़ीमें हम सद्गुणों की सूचीमें सबसे महत्त्वपूर्ण प्रथम तीन सद्गुण ''अभयं सत्त्वसंशुद्धि'' के विषयमें जानकारी प्राप्त की।

विगत अंकमें हमने देखा कि – साधकके अंत:करणमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर रूपी विकारोंका कचरा उत्पन्न होता रहता है। इनका मूल रजोगुण एवं तमोगुणमें है। अत: साधकको इनपर नियंत्रण सावधान रहकर रखना चाहिए। प्रस्तुत अंकमें पढ़िये अगला सद्गुण –

''ज्ञानयोग व्यवस्थिति'' **– संपादक**

(गतांकसे आगे)

भगवान कहते हैं, ''अर्जुन! 'सत्त्व संशुद्धि' जिसके भीतर विराजमान है, ऐसे पुरुषके अंदर रजोगुण व तमोगुणसे निर्माण होने वाले संकल्प-विकल्प और काम, क्रोधादि षड्विकार कभी नहीं रहेंगे।'' आगे वे अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं–

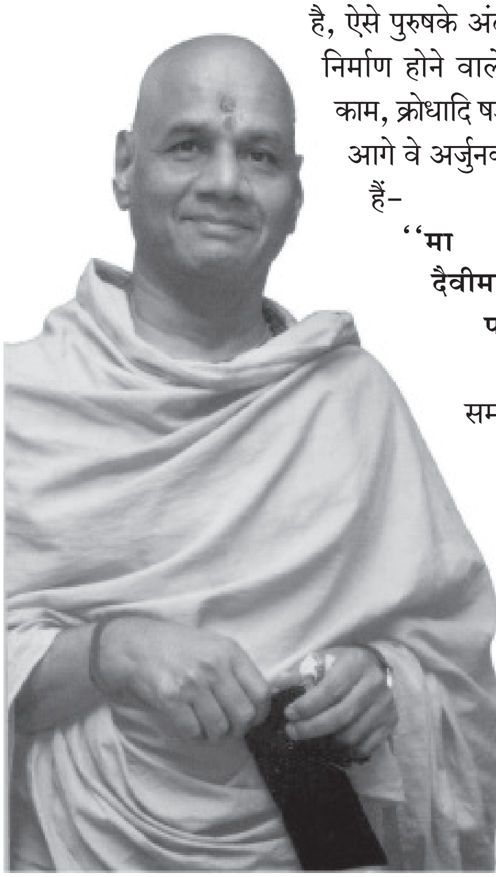

''मा शुच: सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव'' (५/१६)।

अर्थात, तुम्हें तो यह सम्पदा जन्मसे ही प्राप्त है।

प.पू. गुरुदेव कहते हैं, ''जब मैं अर्जुनके जीवनपर विचार करता हूँ तो पाता हूँ कि इन्हीं जन्मजात सद्गुणोंके कारण ही भगवान, अर्जुनको इतना अधिक स्नेह करते थे।'' इस संबंधमें उन्होंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

पांडवोंको अज्ञातवासमें रहना पड़ा और विदुरजीकी सलाहसे वे वारणावतसे ब्राह्मणवेश में भागकर स्वयंकी रक्षा करते हुए चक्रनगरीमें जा पहुँचे। तब वहाँ पर रात्रिके समय अर्जुनका स्वर्गके गंधर्व चित्ररथसे युद्ध हो जाता है। चित्ररथ कभी पराजित नहीं हुआ था। लेकिन, अर्जुनने उसके रथको जला दिया तथा उसे पराभूत कर दिया। उस समय चित्ररथने कहा, ''पार्थ! मैं तुम्हारा अभिनंदन करता हूँ। तुमने मुझे पराभूत कर दिया। इसका एक ही कारण मेरी समझमें आता है कि तुमने जो ब्रह्मचर्यका पालन किया है, उसने तुम्हे सदैव विजयी बनाए रखा एवं तुम मेरा पराभव कर सके। अत: मैं प्रसन्न होकर तुम्हें एक विद्या प्रदान करना चाहता हूँ।''

अर्जुन ने कहा, ''मैं पराभूतोंसे कुछ भी ग्रहण नहीं करता।''

(कभी-कभी तो मुझे लगता है कि अर्जुनके इस उच्च चरित्रपर ही पांच-सात दिन बोला जाना चाहिए।)

अर्जुन विशुद्ध चित्त (सत्त्व संशुद्धि) के कारण ही विजयी रहे :–

अर्जुनका चित्त विशुद्ध है। चित्ररथने यही कहा कि, ''सद्गुणी होकर भी आप लोगों पर इतना संकट क्यों? मुझे इसका एकमात्र यही कारण

लगता है कि आपको किसी सद्गुरु की छत्रछाया प्राप्त नहीं हुई। इसलिए यहाँ से जाते समय धौम्य मुनि को सद्गुरु के रूपमें अपनाओ और तब देखो आपके जीवन में क्या रौनक आती है। और वहीं हुआ। उस घटनाके पश्चात धौम्य मुनि, का पांडवों के जीवन में पदार्पण हुआ और पांडवोंकी उन्नति आरंभ हो गई।

चित्ररथ स्वर्गका गंधर्व है। वह स्वयं जब अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए कहता है कि ''तुम्हारा चित्त अत्यंत विशुद्ध है।'' इससे बढ़िया प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं।

'अभयं सत्त्वसंशुद्धिः' जीवनके सारे व्यवहार करते रहना, लेकिन ये **सारे व्यवहार हमारे चित्तपर अपना असर न छोड़ें, यह बहुत बड़ी बात है।** जो काम करना है, उस कामका विचार मनमें नहीं आयेगा, यह बात नहीं, लेकिन वह विचार चिपके नहीं, आकर चला जाय, वह विचार स्थायी नहीं हो। हमारे तो विचार और विकार सबका मुरब्बा बन जाता है।

लौकिक दृष्टिसे देखा जाए तो, अर्जुन नर है, गृहस्थ है, क्षत्रिय है, योद्धा है, लेकिन यह सब होकर भी उसका चित्त अत्यंत विशुद्ध है।

प.पू. गुरुदेव कहते हैं– ''देखो, भगवत गीता एक अत्यंत महान योद्धा को, उससे भी महान योद्धा के द्वारा, रणक्षेत्र में, दिया गया उपदेश है। इसलिए, कृष्ण का कोई रूप यदि हमारे सामने होना चाहिए, तो वह एक महान योद्धा का रूप होना चाहिए। (उनका बंसीवाला रूप कब तक ध्यानमें रखेंगे?) और अर्जुनकी भी यही दास्तां है। ये लोग अपने सम्पूर्ण जीवन संघर्षरत रहे, फिर भी अपने अंतःकरणकी विशुद्धताको बनाये रखा हैं। चित्तसंशुद्धि!

संसारी झंझटोंसे घबराकर बहुत बार लोग यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि ''ऐसा लगता है कि सब कुछ छोड़-छाड़ कर कहीं चले जायें। पर कहाँ जायें?'' क्या स्थान बदलनेसे हमारी समस्या का हल होगा? यदि ऐसा लगता होगा, तो वह व्यर्थ है। वास्तवमें तो हमारी वृत्तियोंके उपशमनकी आवश्यकता है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ मुझे भगवान द्वारा प्रदत्त परीक्षाके रूपमें लगनी चाहिए।

प्रतिकूलता से कभी घबराएँ नहीं :–

संसारी झंझटोंसे घबराकर बहुत बार लोग यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि ''ऐसा लगता है कि सब कुछ छोड़–छाड़ कर कहीं चले जायें। पर कहाँ जायें?'' क्या स्थान बदलनेसे हमारी समस्याका हल होगा? यदि ऐसा लगता होगा, तो वह व्यर्थ है। वास्तवमें तो हमारी वृत्तियोंके उपशमनकी आवश्यकता है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ मुझे भगवानद्वारा प्रदत्त परीक्षाके रूपमें लगनी चाहिए।

जब हमारा पाला अवांछनीय लोगोंके साथ पड़ जाता है और हमें ऐसा लगता है कि कहाँसे ये मेरे जीवनमें आ गये? इन्हें छोड़ा भी तो नहीं जा सकता है, साथमें जीवन–यापन करना होता है। यहाँ मैं सिर्फ पति–पत्नीकी ही बात नहीं कर रहा हूँ। अरे, ऐसा एकाध भाई भी हो सकता है, कोई रिश्तेदार भी हो सकता है... कोई साथी भी ऐसा हो सकता है।

ऐसे प्रसंग हेतु स्वामी रामतीर्थने एक बहुत सुंदर बात कही कि जब भी कभी ऐसा व्यक्ति आपके सामने आता है, तो यह समझना कि भगवानने मेरी मानसिक शक्ति बढ़ाने के लिए मुगदर (कसरत करनेका लकड़ीका भारी उपकरण) भेजा है। जिस प्रकार मुगदर घुमानेसे शरीर सशक्त होता है, उसी प्रकार प्रतिकूल स्वभाव वाली आपकी पत्नी, पति या ऐसा भाई अथवा ऐसी परिस्थिति आदिके लिए ऐसा समझना चाहिए कि भगवानने इसे मेरे मानसिक स्नायुओंको स्वस्थ रखनेके लिए ''मुगदर'' भेजा है। ऐसे लोगोंके साथ, सहज व्यवहार करते रहनेसे मनकी शक्तिका विकास होता है।

वास्तविक चित्त संशुद्धि क्या है?:–

मनको क्षुब्ध करने वाले सारे पदार्थ, सारी परिस्थितियोंके होते हुए भी जिसका मन क्षुब्ध नहीं होता; अपितु सहज एवं शांत बना रहता है, उसीने वास्तवमें चित्तकी परिपूर्ण शुद्धि की है। मैं हिमालयकी कंदरामें बैठा रहूँ और यह कहूँ कि '' देखो, मुझे कभी गुस्सा नहीं आता है... अरे भाई, विवाह करके देखो और फिर चंद महीने बाद देखो, क्रोध आता है कि नहीं आता है? कहनेका अर्थ यह है कि क्रोधके उद्दीपक, कामके उद्दीपक, लोभके उद्दीपक आदि प्रसंगोंके रहते हुए भी जिसके मन में विकार नहीं उठता, उसका चित्त चारों ओरसे शुद्ध हो गया।

गीतामें 'दैवी सम्पदा' के अंतर्गत अगला सद्गुण है– **ज्ञानयोगव्यवस्थिति:**

अर्थात, परमात्माके स्वरूपको तत्त्वतः जाननेके लिए सच्चिदानंदघन परमात्माके स्वरूपमें एकीभावसे ध्यानकी निरंतर घनीभूत स्थितिका नाम ही ''ज्ञानयोगव्यवस्थिति'' समझना चाहिए। अब हम इसके एक-एक शब्दके आशयको समझने का प्रयास करेंगे।

'ज्ञान'

'ज्ञानं' शब्द भगवद्गीताको अत्यंत प्रिय है। **'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'** भगवान अर्जुन से कहते हैं, ''अर्जुन! ज्ञानसे पवित्र इस संसारमें कुछ भी नहीं है। ज्ञान ही सर्वाधिक पवित्र है। स्थान-स्थानपर भगवषद्गीतामें प्रभुने ज्ञानकी महत्ताका प्रतिपादन किया है। इस हेतु प्रयास अपेक्षित है; क्योंकि जन्म लेते ही कोई ज्ञानी नहीं हो जाता। पूर्वजन्म में आपने कोई साधन किया हो, आप वह संबल लेकर आये हों और आपने वह ज्ञान अपने-आप खोज लिया हो तो बात दूसरी है। लेकिन, ऐसे लोगोंको भी ज्ञानका उद्दीपन करना पड़ता है। जो अपने-आप नहीं होता।

ज्ञानार्जनके तीन साधन:–

ज्ञानके लिए जो पर्यूषण (उपासना) करना होता है, वह तीन प्रकार का है;

''आत्मावाअरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्य:''

महर्षि याज्ञवल्क्य महाराजने अपनी पत्नी मैत्रेयीसे कहा, ''देखो मैत्रेयी, आत्मदर्शनके लिए, आत्मज्ञानके लिए तीन बातें अत्यंत आवश्यक हैं; **'श्रोतव्य: मंतव्य:निदिध्यासितव्य:।'** अपनी भाषामें कहना हो तो

(१) श्रवण
(२) मनन और
(३) निदिध्यासन ।

१) श्रवण :–

ज्ञानप्राप्तिके लिए जो श्रवण नहीं करेगा, उसे कभी ज्ञान नहीं हो सकता। आपने आज तक जो भी ज्ञान पाया है, वह चाहे लौकिक हो अथवा आध्यात्मिक, वह श्रवणके माध्यमसे ही पाया है।

सुना है, पश्चिममें अध्ययनशील व्यक्तिके लिए कहा जाता है, 'He is a well read person' किन्तु हमारे यहाँ इस हेतु 'बहुश्रुत' शब्दका प्रयोग होता है। बहुत पढ़ने वाला भी विद्वान हो जाता है, लेकिन पढ़नेमें आपने जितना समय दिया, उतना ही समय यदि आपने श्रवणमें दिया, तो पढ़नेसे जो ज्ञान प्राप्त हुआ, उससे २० गुणा अधिक ज्ञान आपको श्रवणसे प्राप्त हो जायेगा। श्रवणकी ऐसी शक्ति है; क्योंकि पढ़नेमें आप एक-एक पुस्तक पढेंगे,एक-एक पन्ना पढेंगे, लेकिन आप जब किसी अच्छे वक्ताको सुनते हैं, उस समय कितनी ही पुस्तकोंका सार आपको मिल जाता है, जो उस वक्ताने पढ़ रखी हैं।

साधकमें श्रवण करनेकी इच्छा होनी चाहिए, जिसे 'श्रोतुक' इच्छा कहते हैं। भगवानने भी भगवद्गीता में अंत में यही कहा है कि जिनको सुनदकी इच्छा न हो, उनको मत सुनाओ। वो सब बेकार है।

पूज्य गुरुदेव कहते हैं,''काशीकी ज्ञानवापी में जाकर मैं भी पाँच-पाँच घंटे महान पुरुषोंका श्रवण करता रहा हूँ। यह श्रवण अत्यंत आवश्यक है, जितने ग्रंथोंको हम जीवनभर में नहीं पढ़ सकते, उतने ग्रंथोंका सार, श्रवण से हमें महान

वक्ताओंके मुखसे उपलब्ध हो सकता है।

२) मनन :–

केवल सुनते रहने वाला भी ज्ञानी नहीं हो जाता। श्रवण करते समय आपको बहुत कुछ मिल गया, लेकिन जैसे 'खाया सब पचता नहीं' उसी प्रकार सुना हुआ सब अपने अंदर उतरता भी नहीं है। इसलिए उसका करना पड़ता है 'मनन' कि मैंने क्या सुना? और जो कुछ सुना उसमें नया क्या है? उसे अपनी स्मृतिमें दोहराया। उसे स्मरण रखनेका प्रयास किया। यह हो गया मनन। अर्थात, श्रवण हो गया, खाना और मनन हो गया–पचना। इस प्रकार ज्ञान आपके अंतरंगमें पूरी तरह जाग्रत होता है मनन करनेके बाद! इस संबंधमें हम भागवत कथाकी धुंधुकारी वाली कथाको याद कर सकते हैं, जिसमें कथाका श्रवण तो गाँवके सभी लोगोंने किया था, किंतु मोक्ष केवल धुंधुकारीका ही क्यों हुआ? स्वर्गसे विमान केवल उसे ही लेने क्यों आया?

यह सच है कि धुंधुकारीके साथ सभी गाँववालोंने कथा सुनी। किंतु उसने श्रवणके पश्चात कथाकी बातोंका मनन किया है, चिन्तन किया; जबकि बाकी के लोग कथा श्रवण के पश्चात ''श्रीकृष्णार्पणमस्तु'' करके कथामें सुनी हुई बातोंको वही श्रीकृष्णके अर्पण करके चले जाते। घर जाकर किसीने कुछ क्षणोंतक भी कथा में सुनी बातों पर चिंतन नहीं किया। ''**श्रवण तु कृतं सर्वैर्न तथा मननं कृतम्**'' अर्थात, श्रवण किया, लेकिन मनन नहीं किया तो फलमें इतना अंतर आ गया।

प.पू. गुरुदेव कहते हैं, ''धुंधुकारीको छोड़ दीजिए। पुराणों का श्रवण करते समय इन कथाओंका उपयोग केवल प्रसंगोंको ध्यानमें रखकर उनमें जो बोध है उसको ग्रहण करनेमें होता है। इसका बोध क्या है? प्रवचनकार कहते हैं– श्रोतव्य: मंतव्य: और भागवतमें बाद में कहा गया, जिसने श्रवण किया, लेकिन मनन नहीं किया, तो हमने कितना भी सुना, कितना भी पढ़ा, उसका जब तक हमने अपनी बुद्धिसे चिंतन नहीं किया, तब तक वह ज्ञान अपना नहीं हुआ। वह अपना तब होगा और उतनी ही मात्रामें होगा, जितनी मात्रामें हम लोग उसका मनन करेंगे। इसलिए, गौण क्या है, मुख्य क्या है। ग्राह्य क्या है और अग्राह्य क्या है? सभी बातें मुझे समझमें आ गयी हैं कि नहीं? कभी–कभी तो उनको यह भी समझमें नहीं आता कि– ''उन्हें यह समझमें नहीं आया है!'' "They even do not know that they did'nt know it" इस स्थितिमें जब श्रवणके साथ मनन नहीं किया जाय, तो उसका लाभ पुण्य के रूप में तो होगा; परन्तु ज्ञानप्राप्तिके रूपमें नहीं होगा। पुण्यके रूपमें लाभ देरीसे फलदायी होता है लेकिन ज्ञानके रूपमें जो लाभ होता है, वह तुरंत फलदायी हो जाता है।

जिसने श्रवण किया, लेकिन मनन नहीं किया, तो हमने कितना भी सुना, कितना भी पढ़ा, उसका जब तक हमने अपनी बुद्धिसे चिंतन नहीं किया, तब तक वह ज्ञान अपना नहीं हुआ। वह अपना तब होगा और उतनी ही मात्रामें होगा जितनी मात्रामें हम लोग उसका मनन करेंगे।

३) निदिध्यासन:–

ज्ञानप्राप्तिमें श्रवण और मननके पश्चात आता है निदिध्यासन! श्रवण और मननके पश्चात जिस बातको हमने जान लिया है कि यह प्रवचन का मूलसार है। अब इस मूल सारपर मनको चिपकाये रखना। अब यदि आपने जो सारभूत ग्रहण किया, वहाँपर अपने मनको चिपकाये रखनेमें समर्थ हैं, तब तो आप ज्ञानसे परिपूर्ण हो जायेंगे। लेकिन सारे ज्ञानकी जो संपदा है, उसको प्राप्त करके भी आपने उसके ऊपर ध्यान नहीं दिया और अपने मनको निरंतर उसके साथ चिपकाकर नहीं रखा, तो फिर जो पढ़ा/सुना हुआ ज्ञान है, वह एकदम बेकार हो गया। इसलिए कहते हैं कि श्रवणके और मननके माध्यमसे हमने जो सारभूत तत्त्व प्राप्त किया, अपने मनसे उसका निरंतर चिंतन करना चाहिए।

संपूर्ण श्रीमद् भागवत का सार–

(...शेष पृष्ठ १२ पर)

पुण्य तिथि पर विशेष

**''श्रीकृष्णसे संवाद करते,
भागवत मंगल–कथा ।
जिसने सुनायी विश्वको,
वह महामानव धन्य था।।''**
–स्वामी गोविंददेव गिरि जी

विशुद्ध-हृदय कथा-वाचकके मुखसे भगवान स्वयं ही बोलते हैं!

पूज्य डोंगरे महाराज दैवी जीव थे। निर्विवाद रूपसे वे संत तो थे ही। संत याने, जिसने ईश्वरीय साक्षात्कार कर लिया है ऐसा पुरुष। अपना भला या बुरा जो कुछ भी हो, पर दूसरोंका जीवन सुधारे, वह संत!

संत तुलसीदासजी ने संत की व्याख्या सुंदर शब्दों में की है–

**''पारस और संतमें, बड़ो अंतर जान।
वह लोहाको कंचन करे, संत करे आप समान।।''**

ऐसे महामानवकी पुण्यतिथिपर प्रस्तुत हैं, दिलको छू जाने वाले कतिपय संस्मरण!

अहो! किं वैचित्र्यम्!

राष्ट्रसंत श्री डोंगरे जी महाराज कथामें कई बार इतने तन्मय हो जाते थे कि उन्हें समय और स्थानका भान ही नहीं रहता। इसलिए महाराजश्री कहते,– 'मेरी कथाका समय निश्चित नहीं होता। मेरे कन्हैयाको कालका बंधन नहीं है। मैं थोड़े ही कथा करता हूँ! मेरे मुखसे कथा करवानेवाला कोई और ही है। श्री दुर्गा प्रसाद भगत (महाराजश्रीकी कथाएँ नोट करने वाले) लिखते हैं, ''मुझे इस बातका अनुभव कई बार हुआ है। कथामें संस्कृत श्लोकका एकाध वाक्य ही लिख पाता, बाकीका रह जाता। कथा पूरी होनेके बाद रातको पूज्य महाराजश्रीको पूछता कि–''दो–तीन श्लोक पूरे लिख नहीं पाया, सो लिखवा दीजिए।''

तब महाराजश्री सिर खुजलाते, श्लोक याद करनेका पूरा प्रयास करते, पर याद ही नहीं आते। महाराजश्रीने मुझे बहुत बार कहा है,– ''यह तो मैंने पढ़ा ही नहीं, कही सुना भी नहीं, पर कथामें कैसे आ गया?'' व्यासपीठपर कथा कहते समय वाणीका झरना बहे और यहाँ अब श्लोक याद न आए। **'अहो! किं 'वैचित्र्यम्'!** तभी तो महाराजश्री कहते,– कथामें बोलने वाला कोई और ही है। श्रीकृष्ण उनके हृदयमें बसे हैं और वे स्वयं ही अपनी कथा कहते हैं।

योग–निद्रामें कथा –

महाराजश्रीने एक बार अभेचंदभाई गांधीसे कहा–

''एक समयकी बात है। व्यासपीठ पर भागवत कथा सुना रहा था। दोपहरका समय था। बड़ी नींद आ रही थी। नींदको हटानेका बहुत प्रयास किया, परंतु आँखें बोझिल हो गयी, पलकें झपक ही जाती थी। डेढ़ घण्टे

नींदको हटानेकी कोशिश करता रहा। बाद में आँखें खोली तो कथा चल रही थी। डेढ़ घंटे तक कन्हैया अपनी कथा स्वयं ही कह गया। वही हावभाव और वही कथा।'' लोगोंको पता ही न चला कि महाराज नींदके अधीन हो गये हैं। तभी तो महाराजश्री कहते हैं कि– ''मैं कथा नहीं कहता हूँ, ऐसा मानकर वक्ता निरभिमानी बनकर कथा कहे, तो भगवान स्वयं वक्ताके मुख द्वारा बोलते हैं। कन्हैया, वक्ताके हृदयमें विराजमान होकर अपनी कथा स्वयं कहते हैं। भागवतमें इसका प्रमाण है। दशम स्कंधकी कथा श्रीकृष्णने शुकदेवके हृदयमें विराजित होकर की है। चाहे जो हो यह तो व्यासपीठका चमत्कार है।

****

बोलो कृष्ण कन्हैया लाल की जय!

महाराजने जबसे भागवत सप्ताहका प्रारंभ किया, तबसे गुजरातमें भागवत कथाका प्रचार विस्तारित हो गया। लोग भागवत कथाको सही अर्थमें समझने लगे। भक्तिका प्रचार–प्रसार होने लगा। कोई उन्हें अपने ज्येष्ठकी मृत्युके बाद केवल धार्मिक अनुष्ठानके निमित्त भागवत कथा सप्ताहका आयोजन करनेके लिए कहता, तो वे साफ इन्कार कर देते। इस उद्देश्यसे कथा करानी हो, तो और किसीसे करवा लेना, मैं तो आनंदकी प्राप्तिके लिए कथा करता हूँ। महाराजश्रीकी कथामें भक्त अनाज, वस्त्र, फल, पैसे रखते तो वे सब वडोदरा ले जाते और अभावग्रस्त लोगोंमें बाँट देते।

उसी समय की बात है, महाराजश्रीके पास एक बहन आयी। उस बहनने भागवत सप्ताह करानेका व्रत लिया था। परंतु उसकेबाद अचानक उसकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दुर्बल हो गयी। उन्होंने अपनी व्यथा महाराजश्रीके सामने व्यक्त की–'मैंने आपकी भागवत कथा करानेका व्रत लिया था। आप कथा कहें, ऐसी मेरी तीव्र इच्छा है; पर कथाका खर्च उठा सकूँ, ऐसी मेरी आज स्थिति नहीं है।'

महाराजश्रीने उस बहनसे कहा– 'तुम उस बारे में कुछ चिंता मत करना, आपकी इच्छा पूर्ण होगी। मैं आपके घर कथा करूँगा। भागवत कथा करने, करानेके बीच पैसोंकी बात आनी ही नहीं चाहिए। भगवानके गुणगान गानेमें, भागवत कथामें पैसेका महत्त्व नहीं है। कन्हैयाकी कथा करानी है, तो उसमें खर्च कैसा? तुम्हारे यहाँ मैं स्वयं आकर कथा करूँगा।' बहनने कहा– ''परंतु मेरे पास तो आपका स्वागत कर सकूँ, उतना भी पैसा नहीं है।'' महाराजश्रीने कहा, 'आप क्यों चिंता करती हो? तुम्हारी इच्छा कथा करानेकी है, वह अवश्य पूर्ण होगी।' कथा किस दिन होगी यह भी उसी दिन कह दिया।

महाराजश्रीने सात दिन कथा चलेगी, इतनी मूंगकी दाल ली और निर्धारित तिथिपर उस बहनके घर कथाके लिए पहुँच गये। उस बहनके गाँवमें कथा हुई। महाराजश्री अपने हाथसे मूंगकी दाल बनाते और खा लेते और भागवत की कथा करते।

बोलो, कृष्ण कन्हैया लाल की जय! ऐसे थे कथा सम्राट श्री डोंगरे महाराज!

****

प.पू. गुरुदेव को कांचीपीठाधीश्वरका मंगल आशीर्वाद!

आदरणीय जीजी श्रीमती ललिताजी मालपाणी ने अपने संस्मरणमें एक स्थानपर लिखा है–

''अनेक संतोंके आशीर्वाद आदरणीय भैया (प. पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज) को सदैव प्राप्त होते रहे हैं। कांचीपीठके परमाचार्यजीके दर्शनके लिए हम दोनों, भैयाके साथ कांची गये। वहाँ पूज्य परमाचार्यजी महाराजने भागवतके विषयमें कई प्रश्न भैयासे पूछे। काफी देर तक भैयासे चर्चाकी और अत्यंत संतुष्ट होकर अपने गलेकी माला भैयाको पहनायी और आशीर्वाद दिया,– **''आप डोंगरे महाराज के वारिस होंगे।''**

परम पूज्य स्वामी जयेंद्रसरस्वतीजीने चातुर्मासमें पैठणमें भैयाकी भागवत भी सुनी और अतिप्रसन्न होकर, अपनी इच्छा से ही, भैयाको मंत्र दे कृतार्थ किया। तथा आजीवन उनकी भैयापर असीम कृपा बनी रही।''

भगवान देख रहा है

''निरीक्षक रखकर, पुलिसकी संख्या बढ़ाकर, सजा देकर अपराध कम नहीं हो सकते । भगवानके प्रति दृढ़ विश्वास, श्रद्धा उत्पन्न होनेके बाद ही, ऐसी प्रवृत्तिपर रोकथाम लग सकती है। अपने-आपपर नियंत्रण रखनेके लिए ईश्वरके प्रति श्रद्धाके बगैर अन्य कोई विकल्प नहीं हो सकता।''

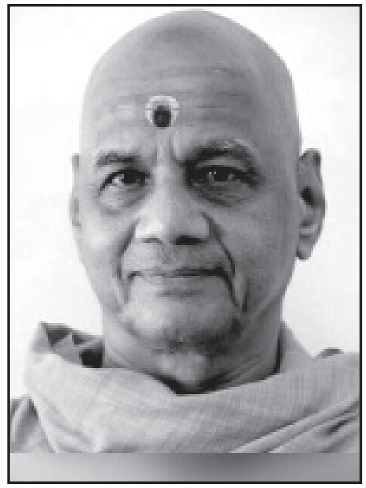

जीवनमें नित्य ही भले-बुरे कार्य होते रहते हैं। कभी वे संजोग से; तो कभी गलतीसे हो जाते हैं। कई बार तो जान बूझकर भी करने पड़ते हैं। इनमें अपने हाथों होने वाले सत्कर्म किसीसे छुपानेको मन नहीं करता; किन्तु अपने अयोग्य कर्मोंका पता कि[illegible] चलते ऐसा [illegible] आदमीको निश्चित रूपसे लगता ही है। एक बात हमें हमेशा ध्यानमें रखनी चाहिए कि हमारा कर्म अच्छा हो या बुरा, वह भगवानसे छिप नहीं सकता; मनुष्यको यही बात समझाने के लिए वैदिक ऋषि अथर्ववेदमें कहते हैं-

''यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति
यो निलायं चरति य: प्रतङ्कम्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते
राजा तद् वेद वरुणस्तृतीय:।।''
(अथर्ववेद ४-१६-१२)

अर्थात, ''मनुष्य खड़ा हो या चल रहा हो, दूसरोंको ठग रहा हो अथवा छिपकर अयोग्य आचरण कर रहा हो, दूसरोंपर अत्याचार करके भय निर्माण कर रहा हो अथवा दो व्यक्ति साथ बैठकर निजी बात कर रहे हों; फिर भी हर कहीं तीसरी शक्ति याने भगवानका अस्तित्व होता ही है। संक्षेपमें प्रस्तुत वेदमंत्रके द्वारा लोगोंको ऋषि यही समझाते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी और सर्वसाक्षी होता है।''

मनुष्य का मन अत्यधिक उलझा हुआ होता है। उसमें जन्म जन्मांतरके अच्छे-बुरे संस्कार मिलते हैं। इसी कारण वह कभी सत्कर्म करता है, तो कभी दुष्कर्म।'' अत्यंत श्रेष्ठ

वेद-प्रदीप

सज्जनोंके अलावा अन्य कोई अपने सत्कर्म, लोगोंसे छिपाये रखने की कोशिश कोई नहीं करता। दुष्कर्मोंको करने वाले, आमतौरपर समाजमें दो प्रकारके लोग दिखाई देते हैं- कुछ अपराधी तो इतने निर्लज्ज होते हैं कि अपने दुष्कर्मोंके बारे में उन्हें तनिक भी बुरा नहीं लगता; बल्कि ऐसे कर्मोंके कारण समाजमें हमारी निंदा होगी, इस बातका भी उन्हें दु:ख नहीं होता। रावण की भांति खुल्लमखुल्ला नि:शंक होकर उनका दुराचार जारी रहता है। ऐसे लोग अल्प होते हैं। कुछ लोग बुरे कार्य लोकनिंदाके भयसे चोरी छुपे करना चाहते हैं। प्राय: लोकापवाद किसीको भी अच्छा नहीं लगता। अंधेरेमें होने वाला दुष्कर्म लोग जाने या न जाने-पर भगवानसे नहीं छिप सकता। वह सर्वान्तर्यामी प्रभु सबका चलना-फिरना, बोलना, अत्याचार करना अथवा छलकपट करना, सबकुछ जानता है। संत कबीरके शब्दोंमें, 'चींटीके पग नेवर बाजै, सो भी साहब सुनता है।' परमात्मा ऐसा होता है। उससे हम कुछ भी छुपा नहीं सकते-इस बातका हमें सदैव स्मरण रहे-ऐसी वेदाज्ञा है ।

यह सीधी-साधी बात मनुष्य अगर स्मरण रखें, तो कई अनुचित बातों पर वह नियंत्रण पा सकता है। इसके लिए सर्वव्यापी परमात्मा को उसे भूलना नहीं चाहिए।

एक महात्मा अपने शिष्योंकी शिक्षा पूर्ण हुई अथवा नहीं यह देखना चाहते थे। उन्होंने सभीको एक-एक फल दिया और जहाँ कोई भी नहीं देख रहा हो, वहाँ जाकर खानेके लिए कहा। सब शिष्य थोड़ी-सी देर में फल खाकर लौट आए। एक शिष्य ऐसा निकला, जो बहुत देर बाद भी

(...शेष पृष्ठ १३ पर)

ज्ञानयोग व्यवस्थिति (...पृष्ठ ८ का शेष)

तत्त्व है, **भक्ति**! हमने श्रीमद्‌भागवतको पढ़ लिया, भक्तिका तत्त्व जाना, भगवानकी भक्तिको जान लिया, लेकिन भगवानकी भक्ति ही नहीं की; तो आपका यह ज्ञान केवल शब्दके रूपमें आपके पास रहेगा, उससे आपके भोजनादिक की तो अच्छी व्यवस्था हो जायेगी, लेकिन वाग्वैखरी शब्दझरी..... ''भुक्तये न तु मुक्तये'' अर्थात, भुक्तिकी व्यवस्था होगी, मुक्ति की नहीं होगी।

श्रवण और मननके माध्यम से, वेदांतकी भाषामें बोलना हो, तो 'अहं ब्रह्मास्मि' 'तत्त्वमसि' 'सोहम्' के सारभूत तक जाना होगा। और भागवतकी भाषामें बोलना हो तो 'भगवत-तत्त्व' को सार रूपसे ग्रहण किया होगा, तो 'भगवत्-तत्त्व' को छोड़ दीजिए और केवल नाममें मन लगाइए, कृष्णरूपमें मन लगाइए और केवल नारायण में मन लगाइए- आपके मन में भक्ति के बारे में कोई संदेह निर्माण न हो, इसलिए भागवत को पढ़ना और समझ लेना और फिर अत्यंत प्रेम के साथ भगवान में अपना मन निरंतर लगाए रखना। यही निदिध्यासन है। निर्गुण तत्त्वों में आत्मस्वरूप, ब्रह्मस्वरूप का चिंतन किया जाता है। वह भी निदिध्यासन है। और वह किया जाता है। ज्ञान के माध्यम से, 'अहं ब्रह्मास्मि' 'तत्त्वमसि'... इसलिए उत्तम ज्ञानियों को इसके अलावा कुछ नहीं करना होता है। और इन सबका सार आ जाता है 'सोहम्' में तो यह हो गया उनका निदिध्यासन। भगवद्‌भक्ति चिंतन करनेवाले भक्तोंके लिए भगवानकी भक्ति है- उसमें अपना मन लगाये रखना... अगर रसमयी भक्तिसे निदिध्यासन नहीं करेंगे, तो ना इधरके रहेंगे और ना उधरके।

एक गृहस्थ थे। उन्होंने संसार को छोड़ दिया, पर भगवानमें मन नहीं लगाया। तो क्या होगा? A great hollow... मनमें इतनी विषण्णता आ गयी- निदिध्यासनके, भक्तिके अभावका यह परिणाम था। इसलिए रसमयी भक्तिकी आवश्यकता है।

श्रोतव्य: मंतव्य: निदिध्यासितव्य:... अर्थात, श्रवण, मनन और निदिध्यासनके माध्यमसे उस तत्त्व तक पहुँचा जा सकता है।

'योग'

भगवान कहते हैं, ''यह जो परमात्म तत्त्व है, उसमें मन लगाना चाहिए। उसमें मन एकाग्र होना चाहिए। योगका अर्थ है एकाग्रता, तल्लीनता... ज्ञानयोगव्यवस्थिति:... व्यवस्थिति- विशेषेण अवस्थिति:।

ज्ञान की प्राप्तिमें एकाग्रता से अडिग होकर जो बैठे हैं। यहाँ योग है, एकाग्रता है। किसके लिए है? ज्ञानके लिए है। देखिए, ये पहले तीन लक्षण अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

''अभयं सत्त्वसंशुद्धि: ज्ञानयोगव्यवस्थिति:''

कहनेका अर्थ है, हम ज्ञानके लिए एकाग्र हो जाएं। मजे की बात यह है कि गूगलपर सारा वेदांत भी है, अन्य सभी ग्रंथ भी हैं, भक्ति भी है, योग भी है, ज्ञान भी है और जो नहीं चाहिए वह भी बहुत कुछ है।

कहनेका अर्थ यह है कि आज हम ज्ञान, ब्रेनमें स्टोर करनेकी बजाय गूगलपर स्टोर कर सन्तुष्ट हो जाते हैं। पर क्या गूगलपर स्टोर ज्ञान, ब्रेनमें स्टोर ज्ञान का मुकाबला कर सकता है? क्योंकि ब्रेनमें स्टोर ज्ञान ही समयपर उपयोगी है। आज हमारी समस्या ज्ञानकी उपलब्धताकी नहीं है; अपितु समयपर उसके उपयोग हेतु वांछित एकाग्रताकी कमीकी है। 'All have lost focus'.

पू. गुरुदेव कहते हैं, ''आज अधिकांश युवकोंकी एक ही समस्या है, "how to focus?" कारण, आज हम लोग distraction के जंगलमें बैठे हैं। आज चित्तको विक्षुब्ध (विचलित) करने वाले असंख्य पदार्थ हमारे चारों ओर बिखरे पड़े हैं, जो हमारी एकाग्रतामें बाधक बनते हैं। दुर्भाग्यसे आज गूगलपर हमारी ज्ञानेन्द्रियोंको विक्षुब्ध करनेके साधन भी उपलब्ध हैं। फलस्वरूप दिमाग ही खराब हो जाता है और चित्तको एकाग्र होने नहीं देता।''

पू. गुरुदेवने चित्तकी एकाग्रताका एक उदाहरण देते हुए बताया-

''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके

दूसरे सरसंघचालक परम पूज्य श्री गोलवलकर गुरुजी जो काशीमें विश्वविद्यालयमें पढ़ाते थे, उस समयकी एक बात है। कुर्सी पर बैठे-बैठे पढ़ा रहे थे। वहाँ संयोगसे एक बिच्छू आया, उनके पैरोंके समीप आया- गुरुजीका पग मिला, तो बिच्छूको जो करना था वह किया, प्रेमसे किया। और जैसे ही बिच्छूने डंक मारा, गुरुजीके पगमें एक झटका आ गया तो उन्होंने उस बिच्छूको उठाकर बाहर फेंक दिया और वापस आकर पढ़ानेके लिए बैठ गये। उनके साथियोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। अरे! अभी आपको बिच्छूने काटा है और आप पढाने बैठ गये? आपका मन कैसे लगता है? गुरुजीने जो उत्तर दिया वह ध्यानमें लीजिए। उन्होंने कहा, ''बिच्छूने मेरे पैरको काटा है, मेरे दिमागको नहीं काटा है। Can we forget all these things? हमारे पास ऐसा दिमाग है कि हम वस्तुओंको, घटनाओंको भूल ही नहीं सकते। हमने तो बेकारका कचरा दिमागमें भरकर रखा है कि ज्ञानको घुसनेका स्थान ही नहीं रहा। ठीक है ना?

''ज्ञान योग व्यवस्थित:'' ध्यान रखना, अर्जुन इतनी एकाग्रतासे आरंभसे परिपूर्ण है। कौरवों एवम् पांडवोंके गुरु द्रोणाचार्यजीद्वारा पक्षीकी आँख बेधनेकी कथा सभी जानते हैं। जिसमें अर्जुनने कहा था, ''मुझे तो केवल पक्षीकी आँख ही दिखाई दे रही है, और कुछ नहीं'' और प्रसन्नतासे गुरुने आदेश दिया, ''बाण चलाओ।''यह है एकाग्रता। ऐसी **एकाग्रताका ही दूसरा नाम 'योग' है।**

ध्यान रखना, योगमें जो चित्त की पांच अवस्थाएँ बतायी हैं उनमें एकाग्रताका चौथा स्थान है समाधिके पहले। पूरा क्रम इस प्रकार है:- १) मूढ़ २) क्षिप्त ३) विक्षिप्त ४) एकाग्र और ५) निरुद्ध (समाधि)।

केवल एकाग्रता साध्य हो जाए, तो बाद में निरोधावस्था कठिन नहीं है। ध्यान रखना एकाग्र वही हो सकता है, जो लक्ष्यके अतिरिक्त अन्य सभीको देखनेसे नकारता है।-

''आवृत्त चक्षु:च्छन् अमृतत्त्वमिच्छा''-- उपनिषदमें कहा है, जिसको अमृतत्त्वकी इच्छा है, उसको अपने नेत्र मूंदलेने चाहिए। केवल नेत्र मूंदकर कुछ भी करनेकी बात केवल नहीं, इसका तात्पर्य है- 'जो मेरा विषय है मुझे उसका ज्ञान ही जानना चाहिए।' तभी सच्ची एकाग्रता आती है। अपने विषयका परिपूर्ण ज्ञान होनेके पश्चात फिर कुछ ज्ञान चाहिए तो ठीक। पहले हमारा काम हमारे विषयका परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त करना है।

'ज्ञान योग व्यवस्थिति:' ज्ञानको प्राप्त करनेके लिए अत्यंत एकाग्रता और वह इतनी एकाग्रता, 'विशेषेण अवस्थिति:' एकदम निश्चल-एकाग्रता।

इस प्रकार दैवी सम्पदके २६ गुण हैं उनमेंसे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण गुणोंका चिंतन-दर्शन किया।

अब आगे अन्य सद्गुणोंको देखेंगे। (क्रमश:)

प्रस्तुति: **श्रीमती वंदना वर्णेकर**

भगवान देख रहा है (...पृष्ठ ११ का शेष)

फल वापस लेकर लौट आया। उसने हताश होकर कहा- परमात्मा सर्वत्र समाया हुआ है और हर कहीं वह मुझे देख रहा है, ऐसा लगता है। यह फल मैं कैसे खा सकता हूँ? जी हाँ, उस परीक्षामें वह अकेला उत्तीर्ण हुआ था ।

प.पू. गुरुदेव कहते हैं, ''निरीक्षक रखकर, पुलिसकी संख्या बढ़ाकर, सजा देकर अपराध कम नहीं हो सकते। भगवानके प्रति दृढ़ विश्वास, श्रद्धा उत्पन्न होनेके बाद ही, ऐसी प्रवृत्तिपर रोकथाम लग सकती है। अपने-आप पर नियंत्रण रखनेके लिए ईश्वरके प्रति श्रद्धाके बगैर अन्य कोई विकल्प नहीं हो सकता।'' खुल्लमखुल्ला अथवा लुक छिपकर दुर्व्यवहार करने वालोंको सजा देनेकी क्षमता उसमें है। संतोंने भगवानपर अटूट श्रद्धा रखकर ही, लोगोंको सदाचरणके लिए प्रेरित किया और वही स्थायी उपाय भी कहा जा सकता है।

भगवद्विश्वास के प्रतीक : नरसी मेहता !

उनका यह दृढ़ विश्वास था कि –' भक्तोंके 'योग–क्षेम' के वहनकी प्रतिज्ञा करने वाले श्यामसुंदर क्या कभी प्रमत्त हो सकते हैं ? जो भगवानके गुणगानको छोड़कर, भक्त अन्य कोई कार्य करनेका विचार भी करे?'

भक्त नरसी मेहताका चरित्र केवल एक शब्दमें सिमट सकता है और वह है– 'भगवद्–विश्वास', आयुपर्यन्त भजन–कीर्तन छोड़कर उन्हें कोई कार्य अच्छा नहीं लगा। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि – 'भक्तों के 'योग–क्षेम' के वहनकी प्रतिज्ञा करने वाले श्यामसुंदर क्या कभी प्रमत्त हो सकते हैं ? जो भगवानके गुणगानको छोड़कर, भक्त अन्य कोई कार्य करनेका विचार भी करे?'

हम देखते हैं कि भगवद्विश्वासपर अवलम्बित उनका सम्पूर्ण जीवन भगवत–कृपाकी लंबी शृंखला से आबद्ध है। द्वारिका जाने वाले यात्रियोंका रुपया लेकर आपने सांवलिया शाहके नाम हुँडी लिख दी। रुपया तो संतोंकी सेवामें लग गया। जब यात्री द्वारिका पहुँचे, तो सचमुचमें स्वयं द्वारिकाधीश को सांवलिया सेठ बनकर हुंडी स्वीकार करनी पड़ी।

जूनागढ़के ब्राह्मण नरसीजीका सदा तिरस्कार करते थे। एक बार पिताके श्राद्धके समय उन लोगोंने पूरी जातिको भोजन करानेका आग्रह किया। नागर ब्राह्मणोंकी वहाँ बहुत बड़ी बस्ती थी। श्राद्धके दिन घरमें घृत कुछ कम पड़ गया। नरसीजी घृत लाने बाजार गये, मार्गमें कुछ संत भगवानका कीर्तन करते मिल गये। बस, फिर क्या था, नरसीजी भी उनमें सम्मिलित हो गये। नामामृतमें मगन होनेपर किसे घरका सामान याद रहता

भक्त चरित्र

है? घरमें भोजन बन रहा था। बिचारी पत्नी, पतिकी प्रतीक्षा कर रही थी। अत: भक्तवत्सल भगवान खुद नरसीके वेशमें घृत लेकर पहुँच गये। फलस्वरूप श्राद्ध व विप्र भोजन आनंदसे पूर्ण हुआ। पत्नीको आश्चर्य तब हुआ, जब रात्रिमें नरसी मेहता घृत लेकर घर पहुँचे और विलंबके लिए खेद प्रकट करने लगे!

इनके पुत्रका विवाह भी श्रीकृष्णचंद्रको ही करना पड़ा। और पुत्रीके विवाहके मायरेका काम भी उसी सांवरियाने पूरा किया। पुत्रीके यहाँ मायरेमें नरसीजी तो हाथमें

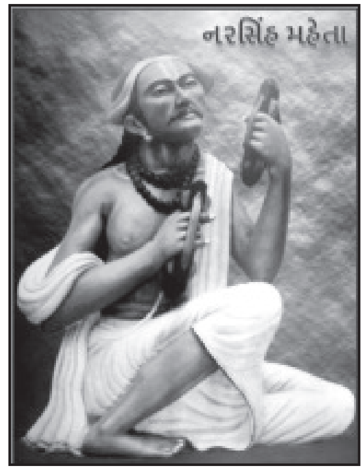

**'' वैष्णव जन तो तेने कहिए,
जे पीड़ पराई जाने रे।''**

गोपीचंदन, तुलसीकी माला और रामनामी ही लेकर जा सके थे। लेकिन जिसके लिए वह विश्वेश स्वयं उपस्थित हों, उसके 'मायरे' में पहुंचे 'रत्नाभरण' से लदे हुए छकड़ों को गिना भी कैसे जाय?

बरबस प्रपंचमें फँसे नरसीजी, एक–एक करके स्त्री और पुत्रके शरीरांतपर, दुखी होने की बजाय पूर्ण रूपसे निश्चिन्त हो अपने सांवलियाकी आराधनामें लग गये।

जूनागढ़के 'रा' मांडलिकने एक बार इन्हें बुलाकर आग्रह किया– 'तुम्हारे उपदेशोंके संबंधमें बहुतसे विद्वान संदेह करते हैं। यदि भगवानको प्रसन्न करनेके लिए तुम्हारी ही बातें ठीक हैं और तुम सचमुच भक्त हो तो भगवानके श्रीविग्रहके गले में माला डालो और प्रार्थना करो कि भगवान वह माला तुम्हारे गलेमें पहना दें।'

(...शेष पृष्ठ २६ पर)

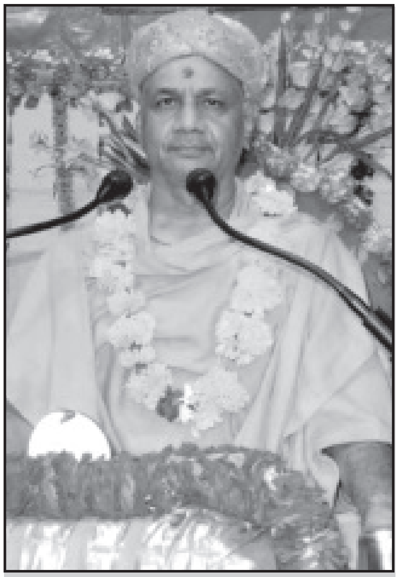

श्री राम का धरती पर अवतरण

परमात्माकी अत्यंत कृपा है कि हम श्रीरामकथाका चिंतन करने जा रहे हैं। यह वह चिंतन है; जो मनुष्यको हर स्थितिमें शांति प्रदान करता है, उसका जीवन कैसा भी हो, उसे यह सार्थक बनाता है, उसका कितना भी पतन हो गया हो, उसे यह सद्गतिकी ओर ही ले जाता है।

सामान्यत: हम लोगोंके मनमें प्रश्न जगते नहीं हैं; क्योंकि हम सोचते नहीं हैं। किंतु जिनके मनमें प्रश्न जगते हैं, उन्हें समाधान चाहिए। महर्षि वाल्मीकिके मनमें यह प्रश्न उठा, जिसे उन्होंने देवर्षि नारदजीसे पूछा कि–''इस समय इस संसारमें सबसे बड़ा गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता और दृढ़–प्रतिज्ञ कौन है?''

नारदजीने उत्तर दिया, ''मुने! आपने जिन दुर्लभ गुणों वाले पुरुषकी जानकारी चाही है, मेरे विचारसे वह इक्ष्वाकु वंशमें उत्पन्न हुए ऐसे पुरुष हैं; जो **श्रीराम** नामसे विख्यात हैं।

महर्षि वाल्मीकिकी राम–कथाका अपना एक स्तर है। वे हमारे सामने ऐतिहासिक रामकथा रखते हैं। यह वह रामकथा है, जिसमें कहीं भी आपको श्रीरामके द्वारा किया हुआ कोई चमत्कार नहीं दिखेगा। रावणवधके बाद, जो स्तवन देवताओं के द्वारा किया गया कि आप साक्षात् नारायण हैं! आपने पधारकर हम लोगोंका कल्याण किया है।

यहां भी श्रीरामका उत्तर ऐसा है, ''आप देवता लोग कुछ भी कहनेको स्वतंत्र हैं; किंतु मैं तो स्वयंको एक मनुष्य ही मानता हूँ, अयोध्या नरेश महाराज दशरथका पुत्र!''

विशुद्ध मानवीय चरित्र:–

हमें सम्पूर्ण रामकथामें उसका स्वर पूर्णत: मानवीय ही दृष्टिगोचर होता है। भगवानका यह अवतार एक विशिष्ट दृष्टिकोणको लेकर ही हुआ है। सामान्यत: लोगोंको लगता है कि भगवान श्रीरामका अवतार रावणका वध करनेके लिए हुआ। किन्तु यह पूर्ण सत्य नहीं है।

अब, भगवान पधारे हैं, तो दुष्टोंको मारा भी है। किंतु उनके पधारनेका प्रमुख कारण यह नहीं है। हां, यह सच है कि सारे दुष्टोंमें रावण अधिक बलवान था, किंतु केवल उसके वध हेतु भगवान रामको पधारनेकी आवश्यकता नहीं थी। वे किसीको भी कहकर उसका वध करवा सकते थे। रामकथामें भी इसका खंडन किया गया है।

यह सत्य है कि रावण बहुत बलवान है, लेकिन यह बात गलत है कि रावण सबसे अधिक बलवान है। रावण से भी बलवान, जो उसको मार सकते थे, कम से कम ३ लोग उस समय भूतलपर विद्यमान थे।

१) आप जानते हैं, सुग्रीवके बड़े भाई बाली, रावणको मार सकते थे; क्योंकि उसने रावणको अपनी कांखमें दबाकर पृथ्वीकी परिक्रमा की थी और किष्किंधा में उसको बांध करके रखा। वह रावणको समाप्त कर सकता था।

२) भगवान दत्तात्रेयके भक्त जिनका नाम सहस्रार्जुन है। वे माहेश्वरी

नदीके निवासी थे तथा उन्होंने नवों सिद्धियोंको पस्त किया था। इनकी एक बार रावणके साथ कहा-सुनी भी हो गयी थी। उन्होंने रावण को महेश्वती नगरी में (जिसका आज नाम महेश्वर है) ये छह माह तक बंदी बनाकर रखा था। वह भी उसे मार सकता था।

३) इनके अतिरिक्त भगवान परशुरामजी महाराज स्वयं भी रावण को मार सकते थे।

ये तीनों वानर अथवा मानव ही थे। अत: इन तीनोंद्वारा मारे जानेपर कोई वरदान भी आड़े नहीं आता था।

रावणको मारना भगवानके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। लेकिन भगवानका आगमन उसके लिए नहीं हुआ जैसा कि हनुमानजी भागवतमें कहते हैं, ''ठाकुर! आप लोक- शिक्षा प्रदान करनेके लिए पधारे हैं।''

कौनसी शिक्षा प्रदान करनेके लिए आये थे भगवान? रोजी-रोटीके लिए अथवा पेट भरनेके लिए विद्याओंकी आवश्यकता होती है, पर उन्हें हम किसीके पास पढ़ सकते हैं। लेकिन मानवीय संबंधोंकी आदर्श स्थिति हमारे सम्मुख, श्रीरामके अतिरिक्त, और कौन प्रस्तुत कर सकता था?

मानवीय-संबंधविज्ञानमें रामकथा अप्रतिम है:-

भगवान पढ़ाने आये थे, **मानवीय-संबंधोंका विज्ञान।** "The science of human relations" अर्थात, भाईके साथ भाईका व्यवहार कैसा होना चाहिए? माता-पिताके साथ पुत्र का, पुत्रोंके साथ माता-पिताका, पतिका पत्नीके साथ, पत्नीका पतिके साथ व्यवहार कैसा हो? राजाका प्रजाके साथ, गुरुका शिष्यके साथ अथवा शिष्यका गुरुके साथ संबंध कैसे होने चाहिए? भगवानने, संबंधोंकी आदर्श स्थितिको स्वयं जीकर हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया।

इन विषयोंकी आजकी सारी पुस्तकें आप टटोल लीजिए। आज अंग्रेजीमें इन चार विषयों Management, Health, Relationship, Leadership आदिको लेकर खूब लिखा जा रहा है। आजका युवा इनसे बहुत प्रभावित भी है। पर जब हम रामकथा देखते हैं, तो ध्यानमें आता है कि आजके ये सारे ग्रंथ, रामकथा के सामने बोने हैं, अधूरे हैं। इन सभी क्षेत्रोंमें रामकथा ही पूर्ण एवं सर्वोपरि दिखाई देती है।

> हमें सम्पूर्ण रामकथामें उसका स्वर पूर्णत: मानवीय ही दृष्टिगोचर होता है। भगवानका यह अवतार एक विशिष्ट दृष्टिकोणको लेकर ही हुआ है। सामान्यत: लोगोंको लगता है कि भगवान श्रीरामका अवतार रावणका वध करनेके लिए हुआ। किन्तु यह पूर्ण सत्य नहीं है।

आश्चर्य होता है, आज हमारे जीवनका क्या हाल हो गया है? अक्सर, हम पाते हैं कि एक डॉक्टर, चार्टड एकाउंटेंट, वकील, इंजीनियर, वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्रोंमें सफलतम व्यक्तियोंमें गिने जानेपर भी, संस्कारोंके अभावमें, वह न तो अच्छा पति है, न अच्छा पुत्र है, न अच्छा पिता है। व्यावसायिक क्षेत्रमें सफल होनेपर भी आपसी संबंधोंको निभानेमें वह अक्सर असफल सिद्ध होता है। हालात ये हैं कि घरमें रोज रणसंग्राम रचा होता है, नतीजा, व्यावसायिक रूपसे सफल होनेपर भी, व्यक्ति हताश, निराश और कुंठित दृष्टिगत होता है। उसे कहीं शांति नहीं मिलती।

आज घर-घरमें अशांति का, अविश्वास का, वातावरण देखते हैं। सबकुछ होनेपर भी हमारे चारों ओर एक प्रकारका तनाव छाया रहता है।

इसका कारण है कि कहीं न कहीं हमने कुछ खो दिया है। और जो खोया है वह कहाँ मिलेगा? वह रामकथामें मिलेगा।

भगवान यही सिखानेके लिए आये हैं कि मनुष्यका मनुष्यके साथ, सारे संबंधोंके दायरेमें, किस प्रकारका व्यवहार होना चाहिए? वे इसी शिक्षण हेतु पधारे हैं। इसके अभावमें बढ़ती समृद्धि, प्रगति और विकासके साथ आप बढ़ती अशांति भी देखेंगे। हताशामें बढ़ती आत्महत्याएँ भी देखेंगे। अत: **जीवनको सफल बनानेका एक ही मार्ग है, और वह है, रामकथा।**

रामकथामें, रामके जीवनसे प्रेरणा प्राप्तकर जो मनुष्य आगे बढ़ेगा, उसे निश्चित रूपसे रामकी कृपा प्राप्त होगी, शांति प्राप्त होगी।

रामकी कृपा, केवल व्रत, उपवास, पूजा-पाठ करनेसे ही प्राप्त नहीं होगी, अपितु रामके गुणोंको, (जितने भी सम्भव हों) अपनानेके प्रयास से ही होगी, उन्हें अपने जीवनमें उतारनेसे ही निश्चित रूपसे होगी।

पू. स्वामीजी के ७१ वें जन्मवर्ष में गीता परिवार ने दी ७१ हजार कण्ठस्थ गीता अध्यायों की भेंट..

संगमनेर के गीता महोत्सव में पू. सरसंघचालकजी एवं पू. योगमहर्षि की गरिमामयी उपस्थिति...

एक वीतराग परिव्राजक, जन-जनमें गीताके कर्मयोगकी चेतना जगानेवाले संत, गीताके कार्यको ही साधना बताकर हजारों कार्यकर्ताओंको नयी धर्मदिशा देनेवाले सद्गुरू पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराजको उनके एकहत्तरवें जन्मवर्षपर क्या भेंट दी जाए? इस दृष्टिसे विचार करके गीता परिवारने संकल्प किया कि गीता के ७१ हजार कंठस्थ अध्याय गीता जयन्तीके दिन पू. स्वामीजी को भेंट करेंगे व उत्सव मनायेंगे।

गीता परिवारकी स्थापना जिस अहमदनगर जिलेके संगमनेर नगरमें हुई वहाँ यह उत्सव मनाना निश्चित हुआ व संगमनेरका मालपाणी परिवार इस उत्सवका यजमान बना। सारे देश में गीता परिवारकी सभी शाखाओंमें उत्साह छाया। गीता परिवारके सभी कार्यकर्ता, गीताजी का बारहवाँ एवं पन्द्रहवाँ अध्याय छात्रोंको कण्ठस्थ करानेमें जुट गये। यजमान बनी संगमनेरकी शाखाने अकेले ही ३५ हजार बालकों को गीता पढ़ानेका बीड़ा उठाया। ८

दिसम्बर २०१९ को होनेवाले इस उत्सव की तैयारी में कार्यकर्ता जून माह से ही संपर्क में लग गये।

रा. स्व. संघ के पू. सरसंघचालक श्री. मोहनजी भागवत, पू. योगी श्री आदित्यनाथजी तथा पू. योगमहर्षि स्वामी श्री रामदेवजी महाराजने इस महोत्सव में पधारने का निमंत्रण स्वीकार किया। इससे सभीका उत्साह शतगुणित हुआ।

संपूर्ण गीता कंठस्थ करनेवाले ८१ गीताव्रती

महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, तेलंगाना, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड, गुजरात तथा कर्नाटक ऐसे ९ राज्योंसे लगभग चौदह सौ बालक तथा कार्यकर्ता संगमनेरके इस महोत्सवके लिए निकले। ८१ बालक ऐसे थे जिन्होंने संपूर्ण गीता कण्ठस्थकर इस महोत्सव को सार्थक किया। संगमनेर, लखनऊ, पुणे, औरंगाबाद आदि स्थानोंसे कार्यकर्ताओंके अथक परिश्रमसे संपूर्ण गीता कण्ठस्थ करनेवाले इन ८१ बालकोंकी विधिवत परीक्षा लेकर उन्हें गीताव्रती उपाधिके साथ सुवर्णपदक, महावस्त्र, सुवर्णमुद्रा, पगड़ी तथा प्रशस्तीपत्रसे सम्मानित किया गया।

पू. स्वामीजीके ७१ वें जन्मवर्षके उपलक्ष्यमें श्रीमती ललिताजी मालपाणी द्वारा कनकाभिषेक किया गया। इस कनकाभिषेककी सुवर्णमुद्राएँ पू.स्वामीजीने गीताव्रतियोंको प्रसाद रूपमें वितरित की। विशेष बात यह थी कि गीता परिवारके कार्याध्यक्ष डॉ. संजयभैय्या मालपाणी तथा उपाध्यक्ष डॉ. आशूभैय्या गोयल इन्होंने भी संपूर्ण गीता कण्ठस्थकर गीताव्रतीकी उपाधि प्राप्तकर आदर्श प्रस्थापित किया। संस्कृत संवर्धन मंडलके २० परीक्षकोंने इस परीक्षाका संयोजन किया।

विविध गुणदर्शन एवं शाखा सम्मान

गीता महोत्सव के महत्त्वपूर्ण बिंदु

- *माननीय सरसंघचालक पूज्य मोहन भागवत जी, पूज्य रामदेव बाबा एवं पूज्य स्वामीजी की गरिमामयी उपस्थिति।*
- *८१ बालक-बालिकाएं, सम्पूर्ण गीता कंठस्थ कर बने गीताव्रती।*
- *केवल सात वर्ष की आयु की तीन बालिकाओं ने की सम्पूर्ण गीता कंठस्थ।*
- *भव्य शोभायात्रा के दौरान रंगोलियों से सजा सम्पूर्ण संगमनेर शहर।*
- *अहमदनगर जिले के ३५ हजार बच्चों द्वारा गीता के बारहवें और पंद्रहवें अध्याय का सामूहिक गायन।*
- *७१ छात्र-छात्राओं द्वारा अलौकिक नृत्यवंदना एवं योगवंदना की प्रस्तुति।*
- *पूज्य स्वामीजी के ७१ वें जन्मवर्ष के निमित्त बालकों द्वारा ७१ हजार कंठस्थ गीता अध्याय की भेंट।*
- *३५० बालक-बालिकाओं द्वारा विजयध्वज महानाट्य का प्रदर्शन।*

कोटा, जयसिंगपुर, पुणे, वड़ोदरा, पानीपत, धुलिया, लातूर, आलंदी, अमरावती, आर्वी तथा सांगली से आए छात्रोंने गीता महोत्सवकी पूर्वसंध्यामें विविध गुणदर्शन कार्यक्रममें अपनी विशिष्ट प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। डॉ. करणभैय्या मित्तल ने इस कार्यक्रमका संयोजन किया। गीता महोत्सवमें सम्मिलित गीतापरिवार की

शाखाओंके प्रमुख अनुराग पाण्डेय (लखनऊ), निर्मला मारू (कोटा), बालकृष्ण दवे (वडोदरा), मीनाक्षी गुप्ता (पानिपत), मंगल राठी व संतोष सोमाणी (कलबुर्गी), सरितारानी माँगलिक (दिल्ली), संतोषी मूंदडा (पुणे), अनीता राठी (जालना), सुचिता भट्टड, ऊषा मूंदडा (श्रीरामपुर), वृषाली खोत (कोल्हापुर), सुनंदा राठी (अहमदनगर), विवेक गुरव (आलंदी), पुरूषोत्तम रामदासानी (नागपुर), स्मिता मूंदडा, प्रतिभा सूर्यवंशी (अकोले), वंदना उदावंत (राहुरी), प्रमिलाताई माहेश्वरी, उज्ज्वला पवार (जयसिंगपुर), सोनाली कलंत्री, शैला काबरा (येवला), रमा साबू (औरंगाबाद), शोभा हरकुट (अमरावती), ओमप्रकाश दरक, संगीताताई जाधव (सोलापुर), विमल राठी (कोपरगांव), संगीता तिवारी (मानवत), उषा वैद्य (आर्वी), अप्पा कालकूटे (नामलगाव), सपना लड्डा (सांगली), पुष्पा मालू, राजश्री कर्वा (लातूर), रेखा मुंदडा (धुलिया), नीता दागडिया (नांदेड) आदि को पू. स्वामीजीने स्मृतिचिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

निवास एवं भोजन व्यवस्था

गीता महोत्सव हेतु आये हुए हजारों बालकोंकी तथा विभिन्न स्थानोंसे आये कार्यकर्ताओंकी निवास व्यवस्था ध्रुव ग्लोबल स्कूल, भंडारी कार्यालय, मालपाणी रिसॉर्ट, मालपाणी लॉन्स, हॉटेल पंचवटी आदि स्थानों पर की गयी। सचिन भैय्या जोशी, हृषिकेश पोफले, आदित्य राठी, निर्मला मणियार, व्यंकटेश लाहोटी, सचिन गाडे, मनोज साकी, कालिदास कलंत्री, हर्ष मालपाणी आदि अनेक कार्यकर्ताओंने निवास व्यवस्था उत्तम ढंगसे संभाली।

राजकुमार गांधी तथा राजस्थान युवक मंडल एवं माहेश्वरी महिला मंडलने भोजन तथा परोसदारीका दायित्व बखूबी निभाया। ध्रुव ग्लोबल स्कूलके लगभग डेढ़ सौ सदस्य तथा छात्रोंने पंजीकरण, निवास, अल्पाहार, भोजन, स्नान तथा यातायात व्यवस्थामें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। प्राचार्या अर्चना घोरपडे, रमाकांत राठी, अबिद शेख, गोपाल कलंत्री, मारुती मंडलिक आदि सदस्य दिनरात इस कार्यको सफल बनाने हेतु जुटे रहे।

भव्य शोभायात्रा

गीता जयंती के दिन मालपाणी विद्यालयके प्रांगणमें सुबह सभी प्रतिमागियों हेतु अल्पाहार की व्यवस्था थी। माहेश्वरी सीनियर महिला मंडलने अल्पाहार वितरणकी व्यवस्था संभाली। सुबह ९ बजे शोभायात्राका आरंभ हुआ। गीता परिवारके हर सदस्यको केसरिया साफा पहनाया गया। मालपाणी विद्यालयकी १२० छात्राओंका रंगोली पथक गाडेकर सर तथा शिंदे काकाके मार्गदर्शनमें पूरे शोभायात्रा मार्गपर रंगोली निकालता हुआ अग्रसर हुआ। सुसज्जित बैलगाडी में मंगलवाद्य वादक आगे बढ़े। ऊँट और घोडोंपर ध्वजधारी कार्यकर्ता सवार थे। गिरीश टोकसेके नेतृत्वमें ७१ छात्र-छात्राओं का ढोल-

ताशा पथक तथा भगवा ध्वजनृत्य करती ध्रुव की बालिकाओं का संघ शोभायात्रा की आगवानी कर रहा था। प्रमिलादीदी माहेश्वरीके निर्देशमें चल रहा झाँझपथक तथा निर्मलाजी मारू के मार्गदार्शन में चल रहे कोटा के राजस्थानी बालक और गोविंदभैय्या माहेश्वरी की सुरीली आवाजमें चल रही भजन-संकीर्तन मंडली शोभायात्राको शोभायमान कर रही थी।

संतोषी मुंदड़ा के नेतृत्वमें पुणे के छात्र एवं कार्यकर्ता अपनी धर्मघोषणाओंसे वातावरणको मंगलमय बना रहे थे। दिल्ली शाखाध्यक्षा श्रीमती सरितारानी मांगलिक ने कृष्ण-अर्जुनके रथकी झाँकी प्रस्तुत की। सांदीपनी आश्रम, संगमनेर के सौ छात्र भक्तिसंगीत की धुन पर नृत्य करते चल रहे थे। श्रीमद्भगवद्गीता की पालकी संगमनेर गीता परिवार के अमित चांडक, शंकर सातपुते, ाििवाजी खर्डे, अहमद शेख, शुभम गायकवाड, अभिषेक सस्कर, पूजा दीक्षित, शकुंतला दायमा, रुक्मिणी लड्डा, सरोज आसावा, राजश्री मणियार, पुष्पा चांडक, मंगला नावंदर, कमलाबाई चांडक, शोभा बाहेती आदि कार्यकर्ता उत्साह से वहन कर रहे थे। इस शोभायात्रा के मार्ग की सुरक्षा का जिम्मा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के १५० स्वयंसेवकों ने उठाया था। हर चौराहेपर यातायात रोककर बालकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही थी। श्री अनिष मणियार तथा धनंजय धुमाल के निर्देश में राजस्थान युवक मंडल तथा लॉयन्स क्लब सफायर ने शोभायात्रा के स्वागत का दायित्व लिया था। हर घर से शोभायात्रापर पुष्पवृष्टि, स्थान-स्थान पर पानी, शरबत, टॉफियाँ बाँटी जा रही थी। श्री अनिषजी मणियार ने इसके लिए अथक प्रयत्न किये।

श्री शेखर कानडे के नेतृत्व में शारदा शिक्षण संस्था की विश्वरूप दर्शन झाँकी शोभायात्रा के आकर्षण का केंद्र थी। इसके पीछे राधा-कृष्ण की वेशभूषा में सजे अनेक बालक जैसे स्वर्ग धरापर ले आये थे। फूलों से सजे अश्वरथपर पू. स्वामीजी विराजमान थे। महेश सत्संग मंडल तथा संगमनेर प्रभातफेरी मंडल के सदस्य भजन-कीर्तन करते स्वामीजी के रथ को आगे बढ़ा रहे थे। संपूर्ण शोभायात्रा मार्गपर सभी जातिधर्मों के समुदायों ने पुष्पमाला पहनाकर पू. स्वामीजी का अभिनंदन-वंदन किया। स्वामीजी के रथ के पीछे चार यंत्ररथों पर सारे गीताव्रती संपूर्ण भगवद्गीता का पाठ करते हुए एक अद्भुत दृष्य का निर्माण कर रहे थे।

शोभायात्रा के अंत में मालपाणी अस्पताल के डॉ.जितेंद्र चुडिवाल की निगरानी में एम्बुलेंस चल रही थी। आखिर में एक स्वच्छता रथ शोभायात्रा के मार्ग की सफाई के लिए नियुक्त था। इस शोभायात्रा में संगमनेर के स्थानीय महिला-पुरुष कार्यकर्ता पारंपरिक भारतीय पोषाक

पू.स्वामी श्री.गोविंददेव गिरिजी महाराज के ७१ वें जन्मवर्ष के उपलक्ष्य में
गीता परिवार द्वारा संगमनेर में आयोजित गीता महोत्सव की भव्य शोभायात्रा...

गीता परिवार
गीता महोत्सव

पू.स्वामी श्री.गोविंददेव गिरिजी महाराज के ७१ वें जन्मवर्ष के उपलक्ष्य में
गीता परिवार द्वारा संगमनेर में आयोजित गीता महोत्सव का भव्य शुभारंभ...

पू.स्वामी श्री.गोविंददेव गिरिजी महाराज के ७१ वें जन्मवर्ष के उपलक्ष्य में
गीता परिवार द्वारा संगमनेर में आयोजित गीता महोत्सव में ७१ हजार कंठस्थ गीता अध्यायों की स्वामीजी को भेंट...

पू.स्वामी श्री.गोविंददेव गिरिजी महाराज के ७१ वें जन्मवर्ष के उपलक्ष्य में गीता परिवार द्वारा संगमनेर में आयोजित गीता महोत्सव में 'विजयध्वज' महानाट्य का मंचन...

में सम्मिलित थे। सारे संगमनेर में इस शोभायात्रा ने गीतामय वातावरण निर्मित किया। श्री सचिन पलोड एवं श्री रमेश घोलप ने शोभायात्रा का संयोजन किया।

विशाल मैदान पर दिव्य आयोजन

संगमनेर गीता परिवार के समर्पित कार्यकर्ता दत्ताभैय्या भांदुर्गे, निलेशभैय्या पठाडे एवं आशुतोष भैय्या गायकवाड संगमनेर के हर विद्यालय तक पहुँचे थे। अकोले की स्मिताभाभी मुंदडा, राहुरी की वंदनादीदी उदावंत, कोपरगांव की विमलभाभी राठी, श्रीरामपुर की श्रीमती ऊषा मुंदडा तथा डॉ. सुचेता भट्टड, अहमदनगर की सुनंदादीदी सोमाणी आदि कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम से अकेले अहमदनगर जिले के ३५ हजार बालकों ने दो अध्याय कण्ठस्थ किये थे। इतने बालकों की बैठक व्यवस्था संगमनेर के मध्यवर्ती जाणता राजा मैदान पर करना तय हुआ। श्री. मधुकरजी येखे तथा मनीषजी मणियार इस मैदान की व्यवस्था में जुट गए।

३० नवम्बर को संगमनेर महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना तथा ध्रुव ग्लोबल स्कूल के ३५० छात्र एवं विभिन्न संस्थाओं के सदस्यों ने श्रमदान कर इस मैदान की स्वच्छता की। नजदीकी सात स्थानों पर पार्किंग के लिए मैदान बनाए गये। संगमनेर की अनेक संस्थाएँ इस कार्य में जुड़ी। युवा महेश के सदस्यों ने विशालजी पडतानी के नेतृत्व में अनेक विद्यालयों में जाकर टी-शर्ट्स तथा टोपियाँ वितरित की। इनरव्हिल क्लब तथा माहेश्वरी ज्यूनियर महिला मंडल के सदस्यों ने बच्चों को वितरित करने की प्रसाद की थैलियाँ भरने का कार्य उत्साह से किया।

श्री. गणेशलाल बाहेती एवं सुप्रभात मंडल के कार्यकर्ताओं ने हजारों की तादाद में आ रहें छात्रों को प्रसाद वितरण किया। श्री ओंकार तिवारी एवं मित्रों ने द्वार स्वागत समिति का कार्य संभाला। संगमनेर महाविद्यालय के एन.एस.एस. के छात्रों ने बालकों की बैठक व्यवस्था तथा पानी वितरित करने का काम किया। पुरोहित संघने अतिथि बैठक व्यवस्था का कार्य किया। जब हजारों की संख्या में एक जैसे टीशर्ट एवं कॅप्स पहने छात्र जाणता राजा मैदान की तरफ आने लगे तो सारे रास्ते जैसे केसरिया रंग में रंग गये। नगराध्यक्षा श्रीमती दुर्गाताई तांबे के निर्देश में सारे परिसर को नगरपरिषद ने साफसुदरा तो रखा ही था, साथ-साथ अस्थाई शौचालयों की भी व्यवस्था की थी।

संगमनेर कॉलेज के एन.सी.सी. के छात्र पार्किंग व्यवस्था देख रहे थे। आर.एस.एस, विश्व हिंदू परिषद तथा बजरंग दल के कार्यकर्ता गाड़ियों का आवागमन नियंत्रित कर रहे थे। धीरे धीरे यह विशाल मैदान हजारों बालकों की तथा गीता प्रेमी नागरिकों की उपस्थिति से जीवंत हो उठा था। इतनी बड़ी संख्या में छात्र आएँ परंतु कहीं भी अव्यवस्था नही थी। अनुशासन का एक उत्तम आदर्श इस महोत्सव में प्रस्थापित हुआ। लगभग १५०० कार्यकर्ता इस आयोजन में कार्यरत थे। गीता परिवार के अभिजित गाडेकर, कुंदन जेधे, भोलेश्वर गिरिश, प्रमोद मेहेत्रे आदि कार्यकर्ताओं ने परिश्रमपूर्वक सभी कार्यकर्ताओं के परिचय पत्र बनाकर संयोजन किया।

मुख्याध्यापक – शिक्षक सम्मान

कार्यक्रम से ठीक पहले सहभागी विद्यालयों के मुख्याध्यापक तथा शिक्षकों का सम्मान आरंभ हुआ। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्यामसुंदरजी जाजू तथा भूतपूर्व मंत्री एवं विधायक श्री राधाकृष्णजी विखे पाटील के करकमलों द्वारा स्मृतिचिह्न देकर सहभागी विद्यालयों का सम्मान किया गया। डॉ.अशोक कुकडेजी, लखनऊ के विधायक श्री नीरज बोराजी, पू. हरिभक्त श्री.

मुकुंदकाका जाटदेवळेकर तथा गीता परिवार राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य इस समय मंचासीन थे। पू. योगी श्री आदित्यनाथजी महाराज कुछ कारणवश इस कार्यक्रम में पहुँच न सके।

अलौकिक नृत्यवंदना एवं योगवंदना से उद्घाटन

पू. सरसंघचालक श्री. मोहन भागवत एवं पू. योगमहर्षि स्वामी श्री रामदेवजी महाराज समयपर कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे। गीता ग्रंथ के पूजन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। गीता परिवार के संस्कार बालभवन तथा ध्रुव के ७१ छात्रों ने भारत के आठों शास्त्रीय नृत्य का मनोहर प्रदर्शन कर कृष्णवंदना प्रस्तुत की। सोलापुर गीता परिवार तथा एम.के.के.एफ. के छात्रों ने श्रीमती संगीतादीदी जाधव के निर्देशन में प्राचीन युद्धकला का उच्चकोटि का प्रात्यक्षिक प्रस्तुत करते हुए स्व. श्री सुरेशजी जाधव को श्रद्धांजलि समर्पित की। श्री मंगेशजी खोपकर के मार्गदर्न में ७१ बालयोगियों ने अत्यंत कठिन योगासनों के साथ योगवंदना प्रस्तुत की। जब ये सारे बालयोगी वृश्चिकासन में एक साथ अपने हाथों को बल खड़े हुए तब पू. रामदेवबाबा ने दोनो हाथ उठाकर बालकों का अभिनंदन किया एवं सभी के साथ छायाचित्र निकालने मुख्यमंचपर पहुँचे। पू. बाबा के इस अभिनंदन से उपस्थित सारे बालक गद्गद् हो गए। इन प्रात्यक्षिकों की प्रस्तुति का निवेदन श्री अरुणभैय्या गौड, श्री आशुभैय्या गोयल तथा श्रीमती अनुराधा मालपाणी ने किया।

अतिथि स्वागत एवं सद्गुश्ररु-पूजन

गीता महोत्सव के प्रमुख अतिथि पू. सरसंघचालकजी का सम्मान श्री राजेशजी मालपाणी तथा गीता परिवार के सचिव श्री. श्रीकांतजी कासट ने किया। पू. स्वामी रामदेवजी महाराज का स्वागत श्री मनिषजी मालपाणी तथा संगमनेर गीता परिवार के शाखाध्यक्ष श्री सतीशजी इटप द्वारा किया गया।

पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज का सद्गुरु पूजन तथा कनकाभिषेक यजमान श्रीमती ललिता जीजी, श्रीमती सुवर्णा काकीजी, राजेशजी, मनीषजी, गिरीशजी तथा आशीषजी ने मालपाणी परिवार की ओरसे किया। इस समय सभी अतिथियों को योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा स्मृतिस्वरूप भेंट की गयी। एक विशाल पुष्पमाला पहनाकर तीनों महानुभावों का अभिवादन किया गया। इस समय इस त्रिमूर्ति के रूप में जैसे मंच पर श्री गोविन्दजी, श्री मोहनजी एवं श्रीरामजी के त्रिगुणात्मक अस्तित्व का अनुभव सभी उपस्थितजनों को हो रहा था।

प्रास्ताविक एवं गीता परीक्षा प्रात्यक्षिक

गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष तथा गीता महोत्सव के मुख्य संयोजक डॉ. संजयजी मालपाणी द्वारा

गीता परिवार का कार्यवृत्त तथा गीता महोत्सव की प्रस्तावना करते हुए सभी का शब्दसुमनों से स्वागत किया गया। इसके पश्चात् संपूर्ण भगवद्‌गीता कण्ठस्थ करनेवाले सभी गीताव्रतियों को श्री हरिनारायणजी व्यास ने मंचपर आमंत्रित किया।

मुख्य अतिथियों द्वारा इन गीताव्रतीयों को गीता के किसी भी लोक का आरंभ करवाकर आगे के लोक बोलने को कहा जाता था। जब एक स्वर में सारे ८१ गीताव्रती आगे के लोकों का पाठ करते तब उपस्थित हजारों बालकों के मन में भी संपूर्ण गीता कण्ठस्थ करने का संकल्प जग रहा था। मात्र ७-८ वर्षीय बालिकाओं का गीताव्रती की उपाधि से विभूषित देखकर पू. स्वामी श्री रामदेवजी महाराज ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

उद्‌बोधन

गीता महोत्सव के विशाल छात्र समुदाय को संबोधित करते हुए पू. स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज ने भारतीय संस्कारों की महत्ता को प्रतिपादित किया।

गीता के दिव्य उपदेश से तथा गीता में विदित जीवनमूल्यों के सिंचन से ही देश का भाग्य जगेगा एवं भावी पीढ़ी में सद्‌संस्कारों का बीजारोपण होगा इस बात को अपने अमृतमयी वाणी में स्वामीजीने शब्दबद्ध किया। अपने उद्‌बोधन के बीच में पू. स्वामीजीने डॉ. संजयजी मालपाणी को सम्मानित कर आशीर्वाद भी प्रदान किये।

७१ हजार अध्यायों की भेंट

जाणता राजा मैदानपर एकत्रित हजारों बालकों ने श्रीमती सुवर्णाकाकी मालपाणी के स्वरों में अपना स्वर मिलाते हुए बारहवें तथा पंद्रहवें अध्याय का सामूहिक पठन आरंभ किया तब सारा वातावरण अलौकिक गीता के स्वरों से गुंजायमान हो गया। अपने सद्‌गुरू को उनके ७१ वें जन्मवर्ष के उपलक्ष्य में ७१ हजार कण्ठस्थ अध्यायों की भेंट देना अपने आप में एक अद्‌भुत संकल्पना थी। इन दिव्य स्वरों से उपस्थित प्रमुख अतिथियों के साथ सभी रोमांचित थे।

पू. योगमहर्षि स्वामी श्री रामदेवजी महाराज का ऊर्जावान संबोधन

जब पू.स्वामी श्री रामदेवजी महाराज अपने हाथ में ध्वनिवर्धक लेकर आगे बढ़े तब उनकी उर्जा को देखकर सभी बालकों ने करतलध्वनि से उनका स्वागत किया।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता योगशास्त्र का आधार ग्रंथ है। योगविद्या से ही भारत विश्ववंद्य है। योग यह प्रदर्शन का विषय नही वह जीवन दर्शन बनना चाहिए ऐसा कहकर उन्होंने स्वयं कपालभाति, नौली

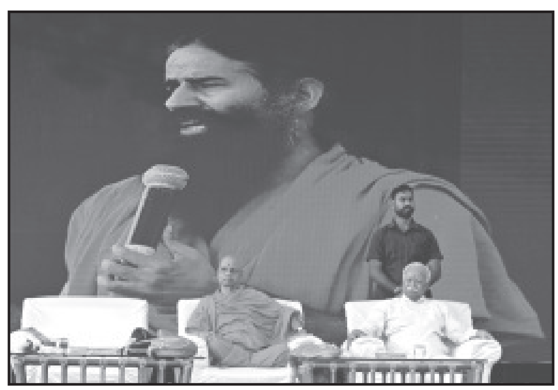

आदि योगक्रियाएँ कर बालकों को योग का पाठ पढ़ाया। जब मंचपर पू. स्वामीजी दो हाथों के बल चलने लगे तब उपस्थित बालकसागर में आनंद की लहरें उठी। हर क्षण तालियों की गूंज बढ़ती ही गयी।

पू. सरसंघचालक श्री मोहनजी भागवत के आशीर्वचन

विश्व के सबसे बड़े एवं प्रभावशाली संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालकजी की उपस्थिति इस समारोह की उच्चतम उपलब्धि थी। अपने अनुशासन के लिए विख्यात संघ प्रमुख ने गीता महोत्सव की संकल्पना एवं अनुशासन की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर बालकों का एवं कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया। **आज के युग में मानवमात्र के कल्याण का एकमात्र ग्रंथ भगवद्गीता है एवं उसके प्रचार प्रसार का यह अनूठा प्रयास अनुकरणीय है** इन शब्दों में महोत्सव का वर्णन आपने किया।

गीता परिवार के बालसंस्कार कार्य के विविध आयाम कालानुरूप बालकों का आकर्षण बने एवं यह संस्कारगंगा संगमनेर से उद्गमित हो देश भर में पहुँची है इस बात के लिए भी आपने कार्यकर्ताओं की प्रशंसा की। सनातन धर्म के जीवनमूल्यों की शिक्षा ही भविष्य में विश्व के लिये मार्गदर्शक बनेगी, ऐसा विश्वास आपने प्रकट किया।

ऋणनिर्देश एवं वंदेमातरम्

इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में योगदान देनेवाली विविध संस्थायें एवं व्यक्तियों को गीता परिवार के कोषाध्यक्ष श्री महेंद्रभाई काबरा ने धन्यवाद अर्पित किये। सहसचिव श्री गिरीशभैय्या डागा ने संपूर्ण वंदेमातरम् का गान किया।

इस समय गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य मंचपर शोभायमान हुए। संपूर्ण कार्यक्रम का सूत्रसंचालन श्री अरुणजी गौड़ ने किया। अतिथियों के पश्चात् अनुशासनबद्ध पद्धति से हजारों बालक कार्यक्रम स्थल से मार्गस्थ हुए.. गीता की महिमा का गान करते हुए.. संपूर्ण गीता को कण्ठस्थ करने का संकल्प मन में संजोए हुए!

'विजयध्वज' महानाट्य

गीता महोत्सव के समारोह का सुनहरा समारोप विजयध्वज महानाट्य से हुआ। डेढ़ सौ नृत्य कलाकार

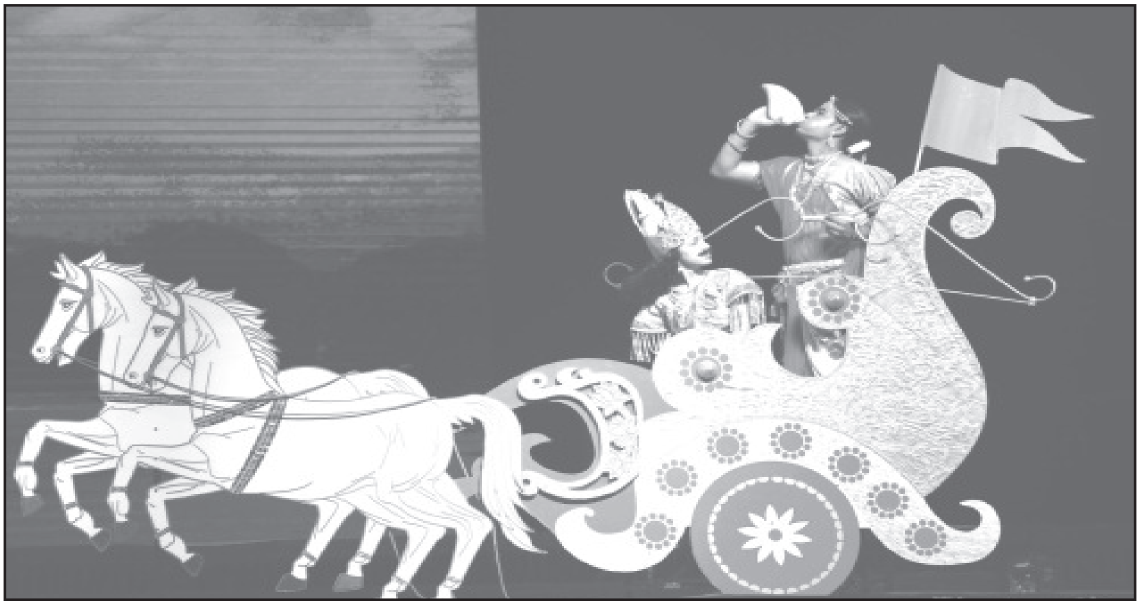

तथा दो सौ नाट्य कलाकारों ने नरोत्तम अर्जुन के दिव्य चरित्र को प्रस्तुत किया। श्री गिरीशजी डागा ने इस महानाट्य के लिए संहिता लेखन तथा संयोजन किया। श्री क्षितिज महापात्राने ध्वनिमुद्रण तथा ध्वनिप्रकाश योजना व एलईडी पार्श्वचित्रों का कार्य संभालते हुए दिग्दर्शन किया। सौ. अनुराधा मालपाणी के निर्देशन में सोनाली महापात्रा, विश्वजीत देशमुख, गंधर्व पिलाई आदि नृत्य प्रशिक्षकों ने नृत्य दिग्दर्शन किया।

कुलदीप कागडे तथा ध्रुव की प्रधानाचार्या अर्चना घोरपडे ने वेषभूषा तथा रंगभूषा का कार्य संभाला। ध्रुव ग्लोबल स्कूल की यह प्रस्तुति एक अंतरराष्ट्रीय दर्जे की थी। डॉ. ओंकार तथा निलांबरी कोर्टीकर, डॉ. संजय दलवी, डॉ. जितेंद्र पाटील आदि अनेकों ने इस महानाट्य के पात्रों के लिए अपनी आवाज में पार्श्वसंवादों का ध्वनिमुद्रण किया। प्रफुल्ल भांडगे तथा राजीव चव्हाण ने नेपथ्य एवं साजसज्जा के कार्य में योगदान दिया।

लगभग पच्चीस हजार दर्शकों की उपस्थिति अपने आप में एक नया कीर्तिमान थी। पू. सरसंघचालक श्री. मोहनजी भागवत एवं योगमहर्षि स्वामी श्री रामदेवजी महाराज पूर्ण समय तक इस मंचन को देखने हेतु उपस्थित रहे। रोमांचित करनेवाले प्रसंग एवं मनोहर नृत्य के सुंदर समन्वयने दर्शकों को ढाई घंटे तक एक स्थानपर बांध दिया। एक साथ तीन मंचों पर प्रस्तुत यह महानाट्य अभूतपूर्व हुआ।

– डॉ. संजयभैय्या मालपाणी
संगमनेर
कार्याध्यक्ष, गीता परिवार

यह संपूर्ण कार्यक्रम
गीता महोत्सव २०१९
संगमनेर
के नाम से यूट्यूब पर देख सकते हैं।

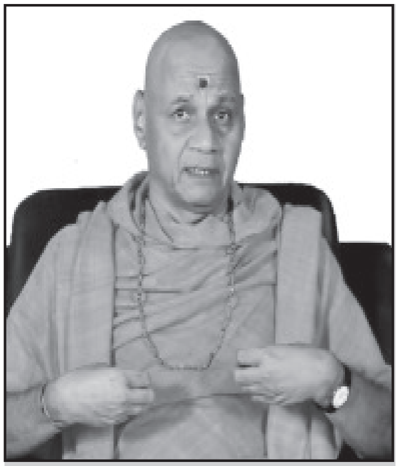

आलस्य का त्याग ही सफलता की कुंजी हैं!

('दासबोध' के प्रकाशमें जीवनकी कृतार्थता!)

जीवनमें उत्थान एवं सफलताप्राप्ति हेतु सर्वप्रथम आलस्यका त्याग अनिवार्य है। आलसी मनुष्यका मन एक विषयपर एकाग्र नहीं हो सकता, उसका मन सदा दोलायमान रहता है। आलस्यके कारण, समय रहते कार्य कर लेनेकी उसे इच्छा ही नहीं रहती। वह सदा यही सोचता रहता है कि– 'कर लेंगे' कार्यको टालता रहता है। उसका चित्त सदा 'दोलायमान' रहता है। जो कुछ अच्छा व लाभकारी है, वह उसे दिखता ही नहीं। ना ही वह किसी हितैषीकी बात सुनता है। अत: इसे कहते हैं 'दुश्चित्त' होना।

समर्थ स्वामी रामदासजीने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'दासबोध' में ऐसे मनुष्योंके लिए स्पष्ट रूपसे कहा है– ''ऐसा आलसी अपना प्रपंच (संसारी कार्य) ही ठीकसे नहीं कर पाता तो वह परमार्थ कैसे करेगा?''

''आलसे राहिला विचार। आलसे बुडाला आचार।।''

अर्थात, आलस्यके कारण उसमें सद्विचार उत्पन्न ही नहीं होते, तो विचारोंके कारण उत्पन्न होने वाले सदाचार कहाँसे प्रकट होंगे? इसलिए जिस मनुष्यके मनमें कृतार्थता (सफल होनेकी इच्छा) की भावना जागृत है, उसे सबसे पहले आलस्यको छोड़कर प्रयत्नवाद (कर्ममें रुचि) एवं परिश्रमकी ओर मुड़ जाना चाहिए।

मनुष्य के तीन गुण :–

प्रत्येक मनुष्यमें तीन गुणोंका वास होता है– सत्त्व, रज और तम! तमोगुणका प्रधान लक्षण है– यथास्थिति–प्रियता! जो आलस्य, अधिक निद्रा आदि षड़–रिपुओंके कारण हैं, जबकि रजोगुणका लक्षण है– क्रिया! और सत्त्वगुण का लक्षण है– ज्ञान, प्रकाश, प्रसन्नता! जिस मनुष्यके भीतर सत्त्वगुण का उदय तथा संवर्धन होगा, उसी का जीवन विकसित होकर कृतार्थ हो पायेगा। और सत्त्वगुण–प्राप्तिमें सबसे पहला अवरोध है आलस्य!

''अवगुण त्यागावा कारणे। न्यायनिष्ठुर लागे बोलणे।।
श्रोती कोपी न धरणे। ऐसीया वचनांचा।।''

अर्थात, मनुष्य को चाहिए कि वह उपरोक्त अवगुणोंके त्याग हेतु बिना दु:खी हुए दृढ़ निश्चयके साथ इन कठोर वचनोंके पालन हेतु कमर कस ले। ध्यान रहे, इस हेतु उसे सबसे पहले सावधान–सजग– दक्ष हो जाना चाहिए।

''सावध–साक्षेपी विशेष। प्रज्ञावंत आणि विश्वास ।।
तयास साधुनी सायास। करणेचि न लगे।।''

'समर्थ' कहते हैं कि इस प्रकार सजग होनेके लिए केवल थोड़ी

देर का एकांत चाहिए; क्योंकि एकांतमें ही क्रमबद्ध रूपसे विचार करना सम्भव है। अत: साधकको चाहिए कि चिन्तन हेतु थोड़ा समय अवश्य निकालें। स्वयं चिंतन करे, सद्ग्रंथोंका वाचन-श्रवण अथवा सत्संगके द्वारा विचारोंका तथा जीवनका व्यवस्थापन कैसे किया जा सकता है, इनपर विचार करते हुए चिंतन-मनन कर सके।

''चालणेचा आलस केला।
तरि अवचिता पडेल घाला।
वे लेला सावरायला।
अवकाश कैंचा।।

'चालना' का अर्थ है विचार! एकांतमें मनन करके स्वयंका कार्यक्षेत्र, प्रपंच और परमार्थके बारे में सोचकर उसकी एक रूपरेखा तैयार करे, जिसमें जीवनके सारे ध्येयोंको केंद्रित करते हुए वरीयतासे जीवनका समायोजन हो। यहाँ यह विशेष रूपसे उल्लेखनीय है कि केवल समायोजन करनेसे भी कोई लाभ नहीं होगा, जब तक कि तदनुसार उसे कार्यरूपमें परिणत न कर लिया जाय।

''अचूक यत्न करवेना।।
म्हणो केले ते सजेना।
आपला अवगुण जागवेना।
काही केल्या।।''

वे आगे बताते हैं, ''सजग होकर बनायी गयी योजनाको कार्यरूपमें परिणत करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। परंतु इसके लिए भी अचूक प्रयासोंकी आवश्यकता होती है। अपनी क्षमताएँ बढ़ाकर, सर्वोच्च एवं उचित अर्थात सटीक प्रयत्न अपने लक्ष्यके प्रति यदि हम करेंगे, तभी सफलता प्राप्त होगी। इसलिए सद्ग्रंथोंका और संतोंका संग करते हुए उनसे प्राप्त विचारोंपर मनन-चिंतन करके ही उन्हें आचरणमें लाना चाहिए। यह कार्य-मग्नता भी कैसे हो?

''काही गलबला, काही निवल।
ऐसा कंठीत जावा काल।।''

केवल कार्य ही कार्य करते रहनेसे भी पूर्ण लाभ नहीं होता। अविरल मेहनतसे थकान अथवा नैराश्यकी भावना भी उत्पन्न हो सकती है। इसलिए विशिष्टचरण के उपरांत कुछ समय रुककर अपने कार्यका मूल्यांकन करें! जब तक हम तटस्थतासे विचार नहीं करेंगे, तब तक अपने कार्यमें क्या और कितनी भूल-चूक हुई है, यह समझमें नहीं आयेगा। इसके लिए कार्यका मूल्यमापन बिना आलस्यके कर लेना चाहिए। इसके लिए अविरल सजगता और मेहनत अपेक्षित है । इससे क्या लाभ होगा? इसके उत्तरमें 'समर्थ' कहते हैं-

''जंवरी चंदन झिजेना।
तंवरी सुगंध कलेना।
चंदन अगठी वृक्ष नाना।
सगठ होती।।
जंव उत्तम गुण न कलें।
तो या जनास काय कले।
उत्तम गुण देखता निवलें।
जगदन्तर।।''

इस प्रकार अचूक एवं अविरल प्रयासोंके कारण लोगोंको अपने गुणोंके बारे में स्वयं बतानेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। मनुष्यके व्यक्तित्वकी सुगंध अपने-आप औरों तक पहुँच जाती है। परंतु इसके लिए जैसे चंदन को घिसना पड़ता है, वैसे ही मनुष्य द्वारा संपन्न जनोपयोगी कार्योंकी सुगंध स्वत: ही लोगों तक पहुँचकर उसे कृतार्थता प्रदान कर देती है।

''उत्तम गुण अभ्यासिता येती।
अवगुण सोडिता जाती।।
कुविद्या सांडून सिकती।
शाहाणे विद्या।।''

अर्थात, मनुष्य बदल सकता है, किसी भी विकारपर विजय प्राप्त कर सकता है, बशर्ते वह उत्तम गुणों की प्राप्ति हेतु अवगुणोंको छोड़ दे और उसमें भी सबसे पहले 'आलस्य' छोड़ें, तो कुविद्या नष्ट हो जायेगी और हम सद्-विद्याकी ओर अग्रसर हो जायेंगे।

आलस्यका त्यागकर अपने अंतरंगमें इस प्रकार गुणोंका वर्धन करें कि हम जिसके भी संपर्कमें आयें, उनका तो भला हो ही और हमारा भी जीवन सार्थक हो जाए। जिनकी समझमें कृति (कार्यों) में यह सद्-विचार व आचार उतरे, वही 'भाग्य पुरुष' हुए और अन्योंको तो 'करंटा' ही कहना चाहिए।

समर्थ रामदासजी दो प्रकार के मनुष्यों का वर्णन करते हैं; एक-

– जिसने करके दिखाया, और दूसरा, जो कुछ भी न कर सका। पहले प्रकार का व्यक्ति अपना जीवन तो सफल करता ही है साथ ही दूसरों की भी सेवा कार्य करता है। और अंतत: परमात्मा की प्राप्ति भी कर लेता है। वह है, 'भाग्यवान'। दूसरे प्रकार का व्यक्ति कोई भी कार्य की सिद्धि न करते हुए आलस्य भरा जीवन जीता है, वह है– 'करंटा!!'

मनुष्य के इन दो प्रकारों को समझ कर सद्गुण संचय से कृतार्थता कैसे प्राप्त हो सकती है, इस के बारे में हम अगले भाग में जानेंगे।

जय जय रघुवीर समर्थ!

(क्रमश:)

– श्रीमती संगीता सुरेश जाधव

भगवद्विश्वास के प्रतीक : नरसी मेहता !

(...पृष्ठ १४ का शेष)

नरसीजी में अविश्वास के लिए स्थान ही नहीं था। उन्होंने सायंकाल भगवान श्रृंगार के समय उनके गले में माला पहना दी। रात्रिभर मंदिर के द्वार पर कीर्तन करते रहे। प्रात: जब पहले दिन के श्रृंगार को उतारने का समय हुआ, बड़े भारी जनसमूह के मध्य भगवान ने वह माला अपने गले से निकालकर नरसीजी के गले में डाल दी।

**“वैष्णव जन तो तेने कहिए,
जे पीड़ पराई जाने रे।”**

'दूसरों की पीड़ा में जो दु:खानुभव करे, वही वैष्णव है।' सर्वत्र, सब समय, सबमें अपने आराध्य को देखने वाले गुजराती संत की यह महावाणी है। उनके पद पूरे भारत में अत्यंत प्रिय हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का तो यह प्रिय भजन था।

(संकलित)

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संपन्न 'वेद सेवा '

प.पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के संरक्षण में कई जनकल्याणकारी योजनाएं कार्यरत हैं। इन सभी में ''वेद-सेवा''प्रमुख है। इसके अंतर्गत हजारों छात्रों को शिक्षा, आवास, भोजन, गणवेश आदि सभी कुछ पूर्णत: नि:शुल्क उपलब्ध है। 'वेद-सेवा' के अंतर्गत ३२ वेद विद्यालयों द्वारा अब तक सैंकड़ों वेदज्ञ देश की सेवा में अर्पित किये जा चुके हैं। इनमें से अधिकांश वेदज्ञ आज आत्मनिर्भर हैं।

इसलिये, वेद सेवा में अर्पित सहयोग सर्वश्रेष्ठ है।

प.पू. स्वामी गोविंददेवगिरिजी महाराज द्वारा संचालित संस्थाएं

क्र.	संस्था का नाम, स्थान	प्रदेश
१	महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे	महाराष्ट्र
२	गीता परिवार, संगमनेर	महाराष्ट्र
३	श्रीकृष्ण सेवा निधि, पुणे	महाराष्ट्र
४	संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, पुणे	महाराष्ट्र
५	श्री गणेश समन्वय आश्रम, बीड़	महाराष्ट्र
६	संत श्री गुलाबराव महाराज वात्सल्यधाम आलंदी	महाराष्ट्र
७	धर्मश्री प्रकाशन, पुणे	महाराष्ट्र
८	लोकमंगल बाल संशोधन केन्द्र, पुणे	महाराष्ट्र
९	वेदश्री गौशाला, आलंदी	महाराष्ट्र

वेदविद्यालय-समाचार

श्री दधिमती वैदिक गुरुकुल, गोठमांगलोद का निर्माणकार्य मार्च तक पूर्ण ।

- **गुरुकुलमें इसी सत्रसे शिक्षण आरम्भ!**
- **सम्पूर्ण निर्माणकार्य मार्च २० तक पूर्ण!**

श्री दधिमती वैदिक गुरुकुल, गोठमांगलोद के निर्माणाधीन 'गुरुकुल कैम्पस' का विशाल एवम भव्य निर्माणकार्य तीव्र गति से प्रगतिपर है।

भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाशजी दायमा, निजामाबाद ने बताया कि विद्यालय एवं छात्रावास, संत-निवास, एवं आचार्य-निवास आदिका निर्माण-कार्य करीब ९०% पूर्ण हो चुका है। जबकि विगत नवरात्रिमें आरंभ किये गये मंदिर एवं यज्ञमंडप हेतु पत्थरोंकी घड़ाईका कार्य चल रहा है तथा प्लिंथ लेवलका निर्माण कार्य हो चुका है।

उल्लेखनीय है कि ११ नवंबरको निर्माणाधीन भवनके पीछे भूमिपर प्रथम बार बोई गई, ग्वार की फसलमें स्थानीय गौशालाकी ५०० गायोंको छोड़कर चराया गया। इसके लिए गौशालाके अध्यक्षने इस अवसर पर वहाँ उपस्थित सर्व श्री ओम प्रकाशजी दायमा, निजामाबाद, श्री सोहनलालजी दायमा हैदराबाद तथा श्री नरेशजी जोधपुर आदि उपस्थित पदाधिकारियोंने आभार व्यक्त किया।

न्यासके अध्यक्ष श्री सोहनलालजी दायमाके अनुसार- ''संपूर्ण निर्माणकार्य मार्च-अप्रैल २० तक पूर्ण हो जायेगा। अत: इसी शैक्षणिक सत्रसे गुरुकुलमें बटुकोंका शिक्षणकार्य आरंभ हो जायेगा।

आपने कहा कि प्रवेश-सूचना अप्रैल-मई माहमें प्रकाशित कर दी जायेगी।

श्री दायमाने बताया कि छात्रोंके निवास, भोजन एवम सम्पूर्ण शिक्षण कार्यका कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा।

दधिमती वैदिक गुरुकुलमें शिक्षण-व्यवस्था उच्चकोटिका होगा। यहाँ वैदिक विषयोंके अतिरिक्त वर्तमान समयानुकूल शिक्षा जैसे कम्प्यूटर, अंग्रेजी, गणित, सामान्य ज्ञान आदि विषय भी पढाये जायेंगे। इस हेतु देशमें चल रहे विभिन्न उच्च कोटिके गुरुकुलोंकी कार्यप्रणालीका भी अध्ययन किया जा रहा है। ताकि यहाँ उच्च गुरुकुल पद्धतिके साथ ही आधुनिक शिक्षाका भी समावेश किया जा सके।

गुरुकुल कैम्पस में निर्मित होने वाले मन्दिर का प्रारूप

–भालचंद्र व्यास

समर्पण हो तो ऐसा !

पूजनीय स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराजकी छत्रछायामें गत छह वर्षोंसे चार हजारे, जिला सेनापति, मणिपुरमें ''**मणिपुर वेदविद्यापीठ**'' चल रहा है। इस विद्यालयके भवन हेतु यहाँके श्री कारकी परिवारने लक्षावधी रुपयोंकी उनके उपयोगमें लायी जा रही भूमि दान दी। श्री कारकी जी विद्यालयके न्यासी नियुक्त किये जानेपर भी विद्यालयकी देखभालके लिये आवश्यक कोई भी काम स्वयं दौडकर करते हैं।

उस दिन तो हद हो गयी, जब भवन निर्माणकार्यके लिये मजदूरोंकी अधिक आवश्यकता देखकर, सारा परिवार औजार लेकर काममें जुट गया, अनपेक्ष भावसे, अपने द्वारा ही दान दी गयी भूमि पर!!

कार सेवा करते श्री चक्रबहादुरजी कारकी आयु ७० और श्री ज्ञानबहादुरजी कारकी आयु ८० वर्ष मात्र !

वेदश्री तपोवन संकल्प-पत्र

वेदश्री तपोवन एक दृष्टिक्षेपमें

- १४ एकड़की प्राकृति पार्श्वभूमि, इंद्रायणी नदीतटके सान्निध्य में।
- विशाल वेदांग, वेदार्थ एवं वेदान्त विद्यापीठ।
- आधुनिक वैज्ञानिक सुविधाओंसे युक्त अनुसंधान व्यवस्था।
- १२० वरिष्ठ छात्रों एवं अनुसंधानकर्ताओं हेतु छात्रावास।
- मुख्य भवनमें वैदिक वस्तुसंग्रहालय, ग्रंथालय, वाचनकक्ष, संगणक-कक्ष।
- यज्ञशाला।
- ध्यानमंडप।
- पुष्करिणी।
- गौशाला।
- अध्यापक-निवास।
- संगीत-कक्ष।
- अतिथि-निवास।
- कुलपति-निवास।
- रमणीय उद्यान।
- विस्तीर्ण सभागार।
- आधुनिक सुविधायुक्त कार्यालय।
- खुला सभास्थान
- भोजनगृह।
- योगसाधना केंद्र।
- भारतीय संस्कारपीठ।
- बालक, युवा एवं वयस्कों हेतु संस्कार/साधना शिविर सुविधा।

वेदश्री तपोवनमें संकल्पित कार्य...

- वेदविषयक गहन अनुसंधान
- व्याकरणादि छह वेदांगों का अध्ययन-अध्यापन।
- विदेशी विद्वानों द्वारा विकृत किये गये वेदमंत्रोंके अर्थका निर्धारण।
- वेदके सर्वोच्च रहस्य-वेदांतका अध्ययन।
- मंत्रविद्याका सप्रयोग अध्ययन।
- सामूहिक राष्ट्रकल्याणार्थ अनुष्ठान।
- वैदिक प्रयोगोंके रूपमें यज्ञ-यागादि आयोजन।
- स्वास्थ्यरक्षण तथा व्याधिनिवारण हेतु योग-आयुर्वेदविषयक अध्ययन एवं अनुसंधान।
- बालक-बालिकाएँ तथा जन-सामान्यों हेतु संस्कार सुविधा।
- वैदिक विशेषज्ञों हेतु संगोष्ठि, कार्यशाला।
- वैदिक ज्ञानके प्रचारार्थ ग्रंथ-प्रकाशन
- आदर्श वैदिक जीवनप्रणालि हेतु मार्गदर्शक विविध शिविर

सभी वैधानिक एवं शासकीय अनुमतियाँ प्राप्तकर निर्माणकार्य प्रारंभ हो चुका है।

प्रकल्प की विशेषताएँ

*** पर्यावरण अनुकूल * सौरऊर्जा, पर्जन्य-जल, वायु-ऊर्जाका अधिकतम प्रयोग।**
*** जलके यथासंभव पुनःप्रयोगार्थ शुद्धीकरण व्यवस्था।**
*** रासायनिक खाद एवं औषधि प्रयोगसे मुक्त।**

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठानकी वेदसेवासंबंधी भव्य योजना :-

''वेदश्री तपोवन'' किसलिए?...

एक समय था... जब हमारा प्रिय भारतवर्ष सुवर्णभूमि कहलाता था। यह विश्वका सबसे समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र था। ज्ञान-विज्ञानकी सभी शाखाएँ यहाँ पूर्ण विकसित थी। यहाँका हर व्यक्ति शिक्षित, सदाचारी एवं सुखी था। अपने आध्यात्मिक ज्ञान, आदर्श चरित्र, स्वयंपूर्ण सामर्थ्य तथा विश्वकल्याणकी मंगल भावनासे यह विश्वका केन्द्र-विश्वगुरु कहलाता था।

वैदिक ज्ञान, वैदिक संस्कृति एवं वैदिक जीवनदृष्टिके कारण भारत राष्ट्र इस महानताके शिखर तक पहुँचा था। कालके प्रदीर्घ प्रवाहमें... वैचारिक दोष, हमारी आंतरिक दुर्बलताएँ, मानव स्वभावजन्य स्वार्थ, बर्बर विदेशी एवं विधर्मी आक्रमण, अंग्रेजोंकी कुटिल नीति, मेकॉलेप्रणीत दासवृत्तिप्रद शिक्षा एवं आधुनिक भौतिक भोगवादी वातावरणसे इस वैदिक विद्याकी घोर उपेक्षा एवं विनाश हुआ।

इस पवित्र वैदिक शिक्षाके पुनर्जागरणके एकमात्र उद्देश्यसे ''महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान'' की स्थापनाका रोमांचक शंखनाद हुआ, जिसके फलस्वरूप प्रतिष्ठानसे संचालित एवं प्रेरित ३२ नूतन वैदिक गुरुकुल देशभरमें वेदाध्ययनके पवित्र कार्यमें निमग्न हैं।

इन सभीका केंद्र होगा ''वेदश्री तपोवन'' जिसमें वेदकी उच्चतर शिक्षा-व्याकरण आदि वेदांग, आयुर्वेदादि उपवेद, वेदोंके सही अर्थका निर्धारण-वेदार्थ एवं वेदरहस्य यानी वेदांतकी शिक्षा समाजके सभी वर्गोंके बालकोंको दी जायेगी तथा वैदिक संस्कृतिके प्रचारकोंका-वैदिकोंका निर्माण होगा। स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण आदि सर्वजनोपयोगी वैदिक सिद्धांतोंका प्रायोगिक अनुसंधान भी होगा जिससे देश एवं समाजको पुनः पूर्वगौरव प्राप्त होनेका मार्ग प्रशस्त होगा।

अतः आइये! अवलोकन कीजिए! समझिए! एवं अर्थ सेवा-सहयोगकी आहुतिसे अपनी संपत्तिको सार्थक कीजिए!...

आपके सहयोग की प्रतीक्षा है।

वन्दे वेदमयं भारतविश्वगुरुम्....

परम पूज्य गुरुदेव का ७१वाँ जन्मोत्सव !

दिनांक २० एवं २५ जनवरी, २०२० – स्थान : ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ, पुष्कर

अपार हर्षोल्लास का विषय है कि 'विद्यावारिधि राष्ट्रसंत परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज' का ७०वाँ जन्मोत्सव इस वर्ष हिन्दी तिथि के अनुसार माघ कृष्ण एकादशी (षट्तिला एकादशी) तदनुसार २० जनवरी, २०२० को तथा अंग्रेजी तिथि के अनुसार २५ जनवरी, २०२० को **'ब्रह्मा सावित्री वेदविद्यापीठ, पुष्कर'** में मनाने का सौभाग्य हम सबको प्राप्त हुआ है।

इसी शुभ अवसर पर प.पू. गुरुदेव के मुखारविन्द से 'श्रीराम-कथा' (श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण पर आधारित) का आयोजन भी दिनांक १९ से २७ जनवरी २०२० तक विद्यापीठ में ही किया गया है।

अतः आप सभी श्रद्धालु महानुभावों से निवेदन है कि इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार अवश्य पधारें। **कथा श्रवण हेतु पधारने वाले श्रद्धालु मुख्य यजमान से सम्पर्क करें।**

मुख्य यजमान – श्री भगवान सहाय तोषनीवाल परिवार, जयपुर मो. ९४१४०७०९४७

वार्षिक महोत्सव २०२०

''ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ, पुष्कर'' का वार्षिक महोत्सव प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष शिवरात्रि महापर्व के शुभ अवसर पर 'परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज' के सान्निध्य में दिनांक १९ से २१ फरवरी, २०२० तक मनाया जायेगा। महाशिवरात्रि २१ फरवरी को है। महोत्सव के आनुषंगिक रूप में रुद्राभिषेक, हवन एवं प्रवचन आदि धर्मिक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे, जिसमें पूज्य महाराजश्री के आशीर्वचन हमें तीनों दिन ही प्राप्त होंगे। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। अपने आगमन की सूचना अवश्य देने की कृपा करें, जिससे आपके ठहरने आदि की उत्तम व्यवस्था कर सकें।

-: निवेदक :-

आनन्द राठी – अध्यक्ष ९८२००११२७७, राम अवतार जाजू – उपाध्यक्ष – ९८२६०४४०००
संदीप झंवर – सचिव ९८२९८८८८०८, अशोक कालानी – कोषाध्यक्ष – ९२९०१०१५१

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल की ओर से द्वितीय भीष्म पुरस्कार आदरणीय श्री. राजीवजी मल्होत्रा

परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज स्थापित संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के माध्यम से गत अनेक वर्षों से साधना शिविर, साधक मार्गदर्शन, सत्साहित्य प्रकाशन, सत्साहित्य का अध्ययन करनेवाले छात्रों को आर्थिक सहयोग, अनाथ व गरीब बालकों के लिए गणेश समन्वय आश्रम का संचालन, संत वाङ्मय के रक्षण हेतु जीवन समर्पित करने वाले महापुरुषों को संत ज्ञानेश्वर पुरस्कार प्रदान इत्यादि अनेक उपक्रम निरंतर चल रहे हैं।

इन सब उपक्रमों के साथ एक और अभिनव उपक्रम गतवर्ष २०१८ से भीष्म पुरस्कार के रूप में जोड़ा गया। पूज्य स्वामीजी के निकटतम साधक, महान अभ्यासक, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त गणितज्ञ एवं 'भास्कराचार्य प्रतिष्ठान, पुणे' के प्राध्यापक डॉ. रविन्द्र जी कुलकर्णी ने पिताजी डॉ. श्रीपाद दत्तात्रेय कुलकर्णी जी की स्मृति प्रीत्यर्थ प्रतिवर्ष संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के माध्यम से एक पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय लिया है।

स्व. डॉ. श्रीपाद दत्तात्रेय कुलकर्णी जी स्वयं एक वरिष्ठ राजकीय अधिकारी एवं इतिहास के अभ्यासक तथा संशोधक रहे, 'भारतीय इतिहास संशोधन मंदिर' इस संस्था के माध्यम से 'इतिहास के विविध कालखंड एवं पहलू' विषय पर शोध करके १८ खंडों में पुस्तकों का निर्माण किया तथा भारतीय इतिहास के बारे में अनेक देशी, विदेशी इतिहासकारों द्वारा लिखा गया लेखन कितना सदोष, एकांगी व पूर्वाग्रहदूषित है, यह प्रमाण सहित प्रकट किया तथा 'भारतीय इतिहास संशोधन मंदिर

संस्था' के नामानुसार अपने इस दिव्यतम लेखन को ''भीष्म प्रकल्प'' के नाम से प्रकाशित किया। आपके द्वारा संपन्न इस विराट कार्य से प्रभावित होकर कांची कामकोटि शंकराचार्य पीठ की ओर से आपको 'इतिहास भूषण' पद से विभूषित किया गया।

ऐसे श्रेष्ठ महापुरुष स्व. डॉ. श्रीपाद दत्तात्रेय कुलकर्णी जी की स्मृति प्रीत्यर्थ ''संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल'' द्वारा गत दो वर्षो से भारतीय संस्कृति के रक्षार्थ अमूल्य जीवन समर्पित करनेवाले महापुरुषों को मानपत्र के साथ पाँच लाख रु. की पुरस्कार राशि पूज्य गुरुदेव के करकमलों द्वारा समर्पित की जा रही है।

गतवर्ष पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के आचार्य बालकृष्ण जी महाराज को प्रथम भीष्म पुरस्कार प्रदान दिसंबर को प्रदान किया गया। इस वर्ष का भीष्म पुरस्कार श्री राजीव जी मल्होत्रा को प्रदान किया गया।

पुरस्कृत महानुभाव संक्षिप्त दर्शन

राजीव मल्होत्रा १९७१ में दिल्ली के सेंट स्टीफन्स कालेज से स्नातक बनकर भौतिक शास्त्र एवं कम्प्यूटर विज्ञान में उच्च अध्ययन हेतु अमरीका गये। अमरीका में अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में वरिष्ठ एक्जीक्यूटिव व मैनेजमैंट कन्सलटेंट के पदों पर कार्य किया। स्वतंत्र उपक्रम भी चलाये किंतु लगभग दस वर्ष पूर्व उन्होंने लाभ कमाने से छुट्टी ले ली और १९९५ में 'इन्फिनिटी फाउंडेशन' नामक एक लाभ-शून्य संस्था की स्थापना की। विभिन्न सभ्यताओं के बीच सद्भाव पैदा करने और भारत के प्रति अमरीका में सही दृष्टि देने के लिए उन्होंने इस संस्था के माध्यम से अनेक शोधवृत्तियां दीं, सम्मेलन व संगोष्ठियों का आयोजन किया।

उनका अपना अध्ययन असामान्म है। इन्टरनेट पर वे लगातार लेख लिखते रहते हैं। इनकी प्रेरणा से एक बड़ी पुस्तक अभी हाल में प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक का शीर्षक है, इन्वेडिंग दि सेक्रेड: एन एनालिसिस ऑफ हिन्दुइज्म स्टडीज इन अमरीका (पवित्र पर हमला: अमरीका में हिन्दुइज्म सम्बंधी अध्ययनों का विश्लेषण)। इस पुस्तक का एक पूरा खंड राजीव मल्होत्रा के लेखों पर आधारित है। इस पुस्तक में अनेक अमरीकी प्रवासी भारतीय विद्वानों के लेखों का संकलन है। प्रत्मेक लेख में विकृत अमरीकी शोध-दृष्टि की गम्भीर समीक्षा दी गई है। गणेश, शिव, काली आदि श्रद्धा केन्द्रों का कितना वीभत्स व विद्रूप चित्रण अमरीकी विद्वानों द्वारा किमा गया है, मह इस पुस्तक में बताया गया है। इस पुस्तक का कहना है कि लगभग ८००० विश्वविद्यालयीन प्रोफेसर भारत पर शोध कार्म में लगे हुए हैं और इन सबका सूत्र संचालन अमरीकन एकेडमी ऑफ रिलीजन (ए.ए.आर.) व उसका एक घटक रिलीजन इन साउथ एशिया (रीसा) नामक संस्थामें करती हैं।

श्री राजीवजी मल्होत्रा के प्रमुख प्रकाशन–

बीइंग डिफरेंट, ब्रेकिंग इंडिया, इंद्राज नेट, बेटल फोर संस्कृत, अकेडमिक हिन्दुफोबिया आदि प्रमुख ग्रंथ प्रकाशित किये गए हैं।

पुरस्कार समारोह

यह पुरस्कार समारोह दिनांक १६ नवंबर २०१९ को प्रोग्रेसिव्ह एज्युकेशन सोसायटी ऑडिटोरियम, पुणे आयोजित किया गया। यह दिव्यतम समारोह ज्ञानेश्वर गुरुकुल के अध्यक्ष पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरी जी महाराज, पद्मविभूषण डॉ. विजय जी भटकर, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ के कुलगुरु डॉ. नितिन जी करमलकर, गणितज्ञ डॉ. रविन्द्र जी कुलकर्णी, डॉ. अशोक जी कामत, डॉ. क्षितिज पाटुकले जी की पावन उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। विशेष उल्लेखनीय है कि इस पुरस्कार के साथ समर्पित किये गए संस्कृत में काव्यात्मक मानपत्र की रचना संस्कृत के परम विद्वान युवाकवि श्री प्रणव जी पटवारी ने की है।

यह संपूर्ण कार्यक्रम
"Bhishm Puraskar2019"
के नाम से यूट्यूब पर देख सकते हैं।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

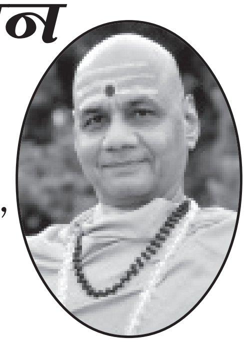

स्थापना – 1990

पंजीकरण क्र. ई – 1438, पुणे

कार्यालयः धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-411 016 दूरभाषः (020) 25652589
ईमेल : dharmashree123@gmail.com
वेबसाईट: www.dharmashree.org

यह न्यास धर्मादाय आयुक्त के कार्यालय में रजिस्ट्रेशन क्रमांक E-1438 (PUNE) के अनुसार पंजीकृत है एवं प्रतिष्ठान को दिये गये अनुदान पर आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत छूट है। प्रतिष्ठान को विदेशी मुद्रा में भी दान स्वीकार करने हेतु भारत सरकार की अनुमति प्राप्त है।

कृपया आपका अनुदान महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के नाम पुणे देय चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट से कार्यालय के पते पर भिजवा दें।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के बैंक खाते में अनुदान भेजने हेतु आवश्यक जानकारी

आप अपनी दानराशी नगद अथवा आर.टी.जी.एस. तथा एन.ई.एफ.टी. द्वारा महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

Maharshi Vedvyas Pratishthan
Bank A/c Details : SB Account No. : **3150561326** With
Central Bank of India, FC Road Branch Pune.
IFSC Code : CBIN0281019

अनुदानदाताओं से विनम्र अनुरोध है कि दानराशी बैंक खाते में जमा करने के पश्चात 'दानदाता' की जानकारी, जैसे पूर्ण नाम तथा पूर्ण पता एवं संपर्क क्रमांक,
dharmashree123@gmail.com इस मेल-आयडी पर अथवा
Whatsapp क्र. 8275066572, 7709103293 पर त्वरित भेज देवें।
विशेष जानकारी कृपया प्रतिष्ठान के पुणे कार्यालय से संपर्क कर प्राप्त करें।

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. श्री प्रकाश जी सोमण – 9422060065

श्री अनिल जी दातार (पुणे कार्यालय प्रमुख) – 8275066572

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम * ई. स. २०२०

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
१० जनवरी	आलंदी (महा.)	योग महोत्सव
१२-०१ से १६-०१	हैदराबाद (आं.प्र.)	श्री हनुमान कथा
१९-०१ से २७-०१	पुष्कर (राज.)	श्री रामकथा
०८-०२ से १५-०२	अकोट-शांतिवन (विदर्भ)	भागवत कथा
१७ फरवरी	आलंदी (महा.)	विद्यालय वार्षिकोत्सव
१९-०२ से २१-०२	पुष्कर (राज.)	शिवरात्रि सत्संग
२४-०२ से २६-०२	रमणरेती (उ.प्र.)	श्री गोपाल महोत्सव
२७-०२ से २८-०२	अयोध्या (उ.प्र.)	ज्ञानेश्वरी प्रवचन
०७-०३ से ०९-०३	औरंगाबाद (महा.)	सत्संग-प्रवचन
१०-०३ से १२-०३	जालना (महा.)	सत्संग-प्रवचन
१३-०३ से १५-०३	अमरावती (महा.)	व्याख्यानमाला
१६-०३ से १८-०३	खामगांव (महा.)	सत्संग-प्रवचन
२०-०३ से २२-०३	बीड (महा.)	सत्संग प्रवचन
२५-०३ से ०२-०४	पुणे (महा.)	रामकथा प्रवचन
०६-०४ से ०८-०४	वडोदरा (गुजरात)	हनुमान जयंती उत्सव
११-०४ से १७-०४	स्वर्गाश्रम (परमार्थ निकेतन)	श्रीराम कथा
२४-०४ से २८-०४	आलंदी (वेदश्री) (महा.)	अनुष्ठान
२८-०४ से १३-०५	विदेश	धर्मयात्रा
१५-०५ से २३-०५	स्वर्गाश्रम (वानप्रस्थ)	महाभारत कथा
०१-०६ से ०३-०६	सोलापुर (महा.)	शिवराज कथा
२६-०६ से ०४-०७	स्वर्गाश्रम (उ.खं.)	गीता साधना शिबिर
५ जुलाई	स्वर्गाश्रम (उ.खं.)	गुरुपौर्णिमा/व्यासपूजा
०६-०७ से २३-०७	स्वर्गाश्रम (उ.खं.)	श्री हरिहर-भक्ति महोत्सव

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची
(दिनांक ०१/०७/२०१९ से दिनांक ३०/०९/२०१९ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

पुणे: मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन, श्री. महेंद्रजी कर्वा, **संगमनेर:** मे. सरगम रिटेल्स प्रा. लि., **सोलापुर:** श्री. राजगोपालजी मिणियार, श्री. प्रसादजी मिणियार, **कोटा:** मे. श्रीनाथ माहेश्वरी अँड सस., **नागपुर:** श्री. अविनाशजी संगमनेरकर, श्री. श्रीनिवासजी वर्णेकर, **चेन्नई:** मे. टोग्रास केमिकल्स इं.प्रा.लि., श्री. गौरीशंकरजी राठी, **देऊळगांव राजा:** श्री. राजकुमारजी काबरा, **अहमदनगर:** मे. आसरा इक्विपमेंट, **अजमेर:** श्री. चारुचंद्रजी व्यास, **मुंबई:** श्रीमती राजश्री बिर्ला, **मानवत:** डॉ. श्री. द्वारकादासजी लड्डा,

रु. ५० हजार से १ लाख

कोटा: श्री. अरुणकुमारजी तुलस्यान, **दिल्ली:** श्री. अमितजी गुप्ता, श्री. अभिषेक अगग्राल परिवार, **बेळगाव:** कु. अस्मिता पवार, **चंद्रपुर:** श्री. विजयजी उपाध्याय, श्री. महेशजी उपाध्याय, **देहरादून:** श्री. रवींद्रजी गोडबोले, **औरंगाबाद:** श्री. रामनिवासजी तुलसीराम गट्टानी, **कोलकाता:** श्री. कोटरीवाला सेवा निधी, **नागपुर:** श्रीमती अलका कर्दळे, **सिल्लोड:** सौ. कांताबाई मानधने,

रु. २५ हजार से ५० हजार

अहमदनगर: मे. टेक्नो ट्रॅक इंजिनियर्स, **सोलापुर:** मे. गंगामाई हॉस्पिटल, **मुंबई:** श्रीमती कृष्णा एवं श्री. गुलझारीलाल मदान,

रु. १० हजार से २५ हजार

गाझियाबाद: श्री. अंबरीश कुमारजी गुप्ता, **पुणे:** डॉ. श्री. प्रकाशजी सोमण, श्रीमती दीपमाला कालानी, श्री. प्रणवजी मुंदडा, श्री. संजीवजी कुलकर्णी, **नॉयडा:** मे. पतंजली रिन्युएबल एनर्जी प्रा. लि., **जयपुर:** मे. भागिरथमल नर्मदा तापडिया चॅरि. ट्रस्ट, मे. शाकंबरी इन्व्हेस्टमेंट प्रा. लि., श्री. कुंदनजी मालपाणी, श्रीमती ज्ञानदेवी गट्टाणी, **दिल्ली:** श्री. रविकुमारजी भार्गव, श्रीमती मंजुला शर्मा, श्री. आदित्यजी सुनेजा, श्री. अनिलजी टंडन, श्री. गौरवजी मांगलिक, श्रीमती उमा सुलक्ष्मीशाह जनकल्याण ट्रस्ट, श्रीमती शशिबाला शर्मा, **बेळगाव:** श्रीमती सुषमा मोहता, **मुंबई:** श्री. अनिलजी पुंडलिक, श्रीमती सरला पुंडलिक, श्रीमती योगिनी साहिता, श्रीमती पार्वतीदेवी नाथमल चांडक चॅरि. ट्रस्ट, श्रीमती पूनम एस माहेश्वरी, श्री. वसंतराव बेडेकर, **अहमदनगर:** मे. सिद्धी फोर्ज प्रा. लि., मे. अहमदनगर स्टील्स प्रा. लि., श्री मिलिंदजी गंधे, श्री. अविनाशजी बोपर्डीकर, **चंद्रपुर:** श्री. घनश्यामजी मुंदडा, **कानपुर:** श्री. देवकीनंदनजी दुबे, **भुवनेश्वर:** श्री. सुनिलजी नायक, **ठाणे:** श्री. भरतजी नाईक, श्री. चंद्रकांतजी देवचके, **गुडगांव:** श्री. सुनील माहेश्वरी परिवार, **सिकंदराबाद:** श्री. लक्ष्मीकांतजी अग्रवाल, **औरंगाबाद:** श्री. रमेश मालानी परिवार, श्री. आनंद मोदाणी परिवार, डॉ. श्री. बद्रिनारायण मुंदडा परिवार, **लातुर:** श्रीमती राधिका येरते, **चिपळुण:** श्री. उदितजी लड्डा, **बीड:** श्री. अशोकजी गुळवेलकर, **किल्ला पार्डी:** मे. सेन्ट्रीफ्युगल प्रॉडक्ट्स, **तरोडा:** श्री. प्रकाशजी अजमेरा परिवार, **कोलकाता:** श्री. मोहनलालजी पेरिवाल, **नांदेड:** सौ. सुशीला काबरा, **हावडा:** श्री. दयानंदजी अगरवाल, **सूरत:** श्री. भगवानदासजी श्रॉफ, **मऊ:** श्री. दामोदरलाल ठरड (एच.यू.एफ.), **सेलू:** श्री. जयप्रकाश बिहाणी परिवार, **समलखा:** श्री. संदीपजी सैनी, **अजमेर:** श्री. भालचंद्रजी व्यास, **भिलवाडा:** श्री. जगदीशप्रसादजी सोमाणी,

रु. ५ हजार से १० हजार

पानिपत: श्री. शिवचरणजी गोयल, **जालना:** श्री. नितिनकुमारजी तोतला, **नागपुर:** सौ. ममता गद्रे, श्रीकृष्ण मंदिर, **पुणे:** सौ. संध्या देशमुख, श्री. चंद्रकांत पारिक, श्री. उदयनजी साठे, श्री. अमोल देशमुख, श्री. प्रभाकरजी तबीब, सौ. उमा साहू, श्रीमती नीला अभ्यंकर, श्रीमती भाग्यश्री आगरकर, श्रीमती मंगला डुकले, श्री. सुनील लोमटे, सौ. केशर सोमाणी, **शाहजहांपुर:** श्रीमती मंजुश्री बियाणी, **नासिक:** श्रीमती प्रिया अटल, **दिल्ली:** श्रीमती पुष्पा शर्मा, श्री. देवेंदरजी मुदगल, श्री. गोपालजी वशिष्ठ, श्रीमती अनिता सुनेजा, श्रीमती सरोजदेवी अग्रवाल, **पाथरी:** श्रीमती सुनंदा जवळेकर, **मुंबई:** श्री. गोपाल नारायणजी मटरेजा, श्री. धनवीर मेहता, **जाखडपारा:** श्री. रामबिलासजी बूब, **चेन्नई:** श्रीमती विजयलक्ष्मी व्यास, श्रीमती शकुंतला चौधरी, श्री. पुखराजजी, **वाराणसी:** श्रीमती सुशीला सारडा, **बीड:** श्री. त्रिंबकदासजी झंवर, **हैदराबाद:** श्रीमती चंद्रभागा दरक, **रायबरेली:** श्री. महेशजी सिकरिया, **औरंगाबाद:** श्रीमती मंगल राठी, श्रीमती नर्मदादेवी मुंदडा, **कोटा:** श्री. आनंदजी राठी, श्री. राधारमणजी राठी, श्री. सूरजजी राठी, श्री. अविनाशजी राठी, **येवला:** सौ. मंगला सदावर्ते, **नांदेड:** श्रीमती सखुबाई तापडिया, श्री. द्वारकादास तापडिया, सौ. शोभा बिहाणी, सौ. प्रेमलता लोया, श्रीमती गीता लोया, **सूरत:** सौ. यशोदादेवी मारु, **वृंदावन:** श्रीमती शोभा अरोरा, **अहमदाबाद:** श्री. जगदीशजी पारिक, **ठाणे:** श्री. जयप्रकाशजी बागला, **मोदीनगर:** श्री. कृष्णदेव गुप्ता, **मंडी पदमपूर:** श्री. दीनदयाल नागपाल, **माजलगाव:** श्री. ओमप्रकाशजी भुतडा, **भिलवाडा:** श्री. बन्सीलालजी सोडाणी, श्री. कन्हैय्यालालजी लाठी, श्री. शांतीलालजी पोरवाल, श्रीमती रामकुंवरदेवी सोमाणी, श्रीमती रामेश्वरी बागवाणी, श्री. त्रिलोकजी सोमाणी, **इंदौर:** श्रीमती मोहिनीदेवी मारु, **मऊ:** श्रीमती विमलादेवी ठरड, **जालना:** श्री. विष्णुकुमारजी चेचाणी, श्रीमती सविता चेचाणी, श्रीमती विजया मणियार, श्री. सुरेशजी राठी, **बंगलौर:** डॉ.सौ. गीतांजली तुळापुरकर, **अमरावती:** सौ. शोभा हरकूट, **वालूर:** श्री. वसंतरावजी चौधरी, **सेलू:** श्री. भिकुलालजी कासट, श्रीमती किरण राठी, सौ. वंदना मंत्री, श्री. सतीशजी करवा, श्री. राजूजी, **परभणी:** सौ. रंजना सोमाणी, **हैदराबाद:** श्री. मुरलीधरजी परतानी, **कोलकाता:** श्रीमती निर्मल मोहता, **त्रिंबकेश्वर:** सौ. छाया भुतडा, **कपासन:** श्री. मनोहरजी लड्डा, **अहमदनगर:** श्री. जेठालालजी पटेल, श्री. मानजीभाई पटेल, श्री. जीवराजजी पटेल, श्री. भारतजी डायाभाई जाबुवानी (पटेल), श्री. कांतीलालजी पटेल

‘जीवनविद्या’ नूतन पुस्तक प्रकाशन, आलंदी

प्रथम पुण्यस्मरण स्व. शांताजीजी

संस्कृत संभाषण शिबिर, आलंदी

समर्थ महासंगम, जांब, महाराष्ट्र

'DHARMASHREE' Periodical - Quarterly
Posted under P.O. Clause No. 129 Regn. No. MAH/HIN/2001/4041

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक श्रीकृष्ण सेवा निधि के लिए मुद्रक और प्रकाशक डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण ने
स्वानंद प्रिंटर्स, डेक्कन जिमखाना, पुणे - ४११००४ में मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण सेवा निधि, ३ मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग,
पुणे - ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया | संपादक - डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण सदस्यों के अतिरिक्त
प्रसाद - मूल्य प्रति अंक रू. ५/- मात्र।